तापमान

अधिकतम 28.1 डिग्री
न्यूनतम 8.5 डिग्री

हरिभूमि
सोनीपत भूमि
रोहतक, रविवार 15 फरवरी 2026

9 एंटीबायोटिक्स का गलत एवं अत्यधिक प्रयोग खतरनाक

10 मोहन नगर की गलियों का एक करोड़ से होगा कायाकल्प

खबर संक्षेप

महाशिवरात्रि पर लगेंगे दो रक्तदान शिविर

गोहाना। 15 फरवरी को महाशिवरात्रि के दिन गांव पूठी और गांव रिवाड़ा में रक्तदान शिविर आयोजित किए जाएंगे। दोनों शिविर इन गांवों के शिव मंदिरों में आयोजित होंगे। शिविरों का समय सुबह 9.30 बजे से सायं 3 बजे तक का रहेगा। गांव पूठी में रक्तदान शिविर ग्राम पंचायत द्वारा आयोजित किया जाएगा। यह शिविर गांव के सरपंच आनंद धनखड़ और पूर्व सरपंच रामकुमार सिंह के सानिध्य में आयोजित होगा। गांव रिवाड़ा का रक्तदान शिविर भी ग्राम पंचायत द्वारा आयोजित किया जाएगा। यह शिविर सरपंच आशीष मलिक और पं. रामनिवास के सानिध्य में आयोजित होगा।

पुलवामा के शहीदों को पौधरोपण कर दी श्रद्धांजलि

सोनीपत। गांव बहालगढ़ में शनिवार का दिन प्रेम और संवेदना के एक अनूठे संगम के रूप में देखा गया। रामनिवास के नेतृत्व में युवाओं ने वैलेंटाइन डे को 'लव फॉर नेचर' के रूप में मनाते हुए पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्रवाद का संदेश दिया। पुलवामा आतंकी हमले की 7वीं बरसी के अवसर पर, ग्रामीणों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने 2019 में शहीद हुए सीआरपीएफ के 40 जवानों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दिन को 'ब्लैक डे' के रूप में मनाते हुए स्वयंसेवकों ने बड़े स्तर पर पौधारोपण किया। जिसमें प्रिंस छाबड़ा, हैप्पी रोहिल्ला, आदित्य,अंकित,अजय, भाई जग्गी,व पंचायत मेंबर संदीप आदि मौजूद रहे।

स्वास्थ्य जांच शिविर में 151 लोगों की जांच

सोनीपत। गांव लिवासपुर की एससी चौपाल में नेत्र एवं स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया गया। गेल गैस प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग, दिल्ली से विशेषज्ञ टीम व मां भारती जनसेवा चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में लगाए गए शिविर में 151 ग्रामीणों ने अपने नेत्रों व स्वास्थ्य की जांच करवाई। नेत्र जांच के दौरान 6 ग्रामीणों को ऑपरेशन का परामर्श दिया गया। संस्था की ओर से मरीजों का निशुल्क ऑपरेशन व आने-जाने का खर्च उठाया जाएगा। इसके अलावा 76 जरूरतमंद ग्रामीणों को निशुल्क चश्मे एवं दवा वितरित की गईं। कारगिल युद्ध में भाग ले चुके पूर्व सैनिक सूबेदार धर्मवीर भगवान ने अनुशासन एवं समर्पण के साथ शिविर की संपूर्ण व्यवस्था संभाली। कार्यक्रम में प्रेम गौतम एवं देवेंद्र गौतम ने सक्रिय समाजसेवी के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

महिला स्पेशल कोच पर पुरुषों का कब्जा रेलवे का प्रयास और खाकी का डर फीका

दिल्ली-अंबाला रूट पर नाम की रह गए ट्रेनों में महिला स्पेशल कोच, बिना संकोच आराम से बैठकर सफर कर रहे पुरुष यात्री

आरपीएफ ने वर्ष 2025 में 24 मुकदमे किए दर्ज, चालान व चेतावनी का नहीं दिख रहा कोई असर, समझाने पर झगड़ने लगते हैं यात्री

महिलाओं के लिए हर सवारी गाड़ी में है दो बोगियों की व्यवस्था, फिर भी असुरक्षित सफर से बढ़ रही परेशानी

रविंद्र ठाकुर ▸▸ सोनीपत

दिल्ली-अंबाला रूट पर महिला यात्रियों को सुगम यातायात सुविधा प्रदान करने के लिए उत्तर रेलवे के प्रयास व्यर्थ साबित हो रहे हैं। महिला स्पेशल ट्रेन के अलावा प्रत्येक गाड़ियों में महिलाओं के लिए अलग से दो बोगियों की व्यवस्था की गई है, लेकिन इन पर भी पुरुष यात्री अपना कब्जा जमाए हुए हैं। ऐसे में रेलवे का प्रयास व खाकी का डर फीका पड़ता नजर आ रहा है। इस कारण महिलाएं खुद को असुरक्षित महसूस करती हैं। सुरक्षा कर्मी भी इसको अनदेखा कर रहे हैं। ऐसे में रेलवे का प्रयास व खाकी का खौफ फीका पड़ता नजर आ रहा है। स्पेशल बोगियों में भी महिलाएं खुद को असुरक्षित महसूस करती हैं।दैनिक यात्री अनीता, कमलेश, तन्नु, संतोष, सुनीता ने बताया कि वह रोजाना सोनीपत से दिल्ली रूट पर आवागमन करती हैं। महिला स्पेशल ट्रेन होने के बावजूद पुरुष यात्री महिलाओं के बीच उनके कोच में सफर कर रहे हैं। रेलवे ने महिलाओं के लिए अधिकतर ट्रेनों में अलग दो बोगियों की व्यवस्था भी कर रखी है, लेकिन उन्हें इस सुविधा का भी पूर्ण लाभ नहीं मिल रहा है। कुछ पुरुष यात्री जल्दबाजी या जानकारी के अभाव में इन बोगियों में सवार हो जाते हैं, कोई उन्हें नहीं रोकता।

महिलाएं बोलीं, रेलवे के अधिकारी कर रहे अनदेखी

पुरुष यात्रियों के चढ़ने का विरोध करने पर वह महिलाओं से झगड़ा करने पर उतारू हो जाते हैं। महिला यात्रियों का आरोप है कि रेलवे अधिकारियों, जीआरपी, आरपीएफ का इस ओर कोई ध्यान नहीं है। इससे उन्हें असुरक्षित माहौल में सफर करना पड़ रहा है। वहीं आरपीएफ का दावा है कि वर्ष 2025 में महिला स्पेशल कोच में सफर करते 24 लोगों को पकड़कर उन पर 13,900 जुर्माना लगाया गया है।

2025 में काटे चालान

माह	चालान
जनवरी	00
फरवरी	02
मार्च	02
अप्रैल	00
मई	00
जून	01
जुलाई	04
अगस्त	14
सितंबर	00
अक्तूबर	00
नवंबर	00
दिसंबर	01

महिला स्पेशल ट्रेन में सुरक्षा कर्मचारी तैनात

महिलाओं की सुरक्षा के लिए महिला स्पेशल ट्रेन व बोगियों में सुरक्षा कर्मियों को तैनात किया जाता है, जिनका कार्य पुरुष यात्रियों को महिला बोगी में सफर करने से रोकना है। अगर कोई पुरुष यात्री महिला बोगियों में चढ़ता है तो उनका चालान किया जाता है। वर्ष 2025 में 24 मुकदमे दर्ज कर लोगों के चालान काटे गए हैं। अगर फिर भी यात्री नहीं मानते हैं, तो जल्द और ठोस कार्रवाई की जाएगी।

-**संगम यादव**, थाना प्रभारी, रेलवे पुलिस बल

गांव बांय में 36 कनाल भूमि की फर्जी रजिस्ट्री मामले की जांच एसआईटी करेगी

नायब तहसीलदार की भूमिका जांच के दायरे में, रिकॉर्ड मांगा

हरिभूमि न्यूज ▸▸ गन्नौर

तहसील गन्नौर के गांव बांय में 36 कनाल जमीन की फर्जी रजिस्ट्री कर धोखाधड़ी करने के मामले में पुलिस ने जांच तेज कर दी है। दिल्ली निवासी विकास कुमार पाडिया की शिकायत पर गन्नौर थाना पुलिस ने फर्जी विक्रेता प्रमोद कुमार निवासी नसीरपुर, खरीदार बलबीर सिंह निवासी पिल्लू खेड़ा, प्रवीन कुमार, रविंद्र और डीड राइटर विनय के खिलाफ केस दर्ज किया था। अब पुलिस कमिश्नर ममता सिंह के आदेश पर विशेष जांच टीम (एसआईटी) का गठन किया गया है। टीम में गन्नौर एसीपी ऋषिकांत, थाना प्रभारी धीरज कुमार, एसआई पवन कुमार और बड़ी थाना से पीएसआई बिटु को शामिल किया गया है।

पुलिस ने तहसील से संबंधित रिकॉर्ड तलब कर लिया है और रजिस्ट्री से जुड़े सभी दस्तावेजों की जांच की जा रही है। नायब तहसीलदार की भूमिका भी जांच के दायरे में है। शिकायत के अनुसार, फर्म स्पाज एस्टेट प्राइवेट लिमिटेड ने वर्ष 2011 में उक्त भूमि खरीदी थी और तभी से कब्जा है।

जाली अथॉरिटी लेटर से फर्जीवाड़ा किया

आरोप है कि जाली अथॉरिटी लेटर व हस्ताक्षरों के आधार पर 27 नवंबर 2025 को फर्जी रजिस्ट्री कराई गई। पुलिस ने आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी के संकेत दिए हैं।

शताब्दी की चपेट में आया बुजुर्ग, नहीं हुई पहचान

सोनीपत। अंबाला-दिल्ली रेल मार्ग पर रोहतक रोड आरओबी के पास शनिवार सुबह करीब साढ़े 10 बजे कालका से दिल्ली जा रही शताब्दी ट्रेन की टक्कर लगने से बुजुर्ग की मौत हो गई। ट्रेन के लोको पायलट संतोष कुमार ने हादसे की सूचना राजकीय रेलवे पुलिस को दी। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर शिनाख्त के प्रयास किए, लेकिन युवक की पहचान नहीं हो पाई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए नागरिक अस्पताल के शवगृह में रखवा दिया है। जीआरपी थाना के जांच अधिकारी विकास कुमार ने बताया कि शनिवार सुबह ट्रेन संख्या 12006 कालका-दिल्ली शताब्दी ट्रेन सोनीपत रेलवे स्टेशन से रनथ्रू निकलने के बाद रोहतक रोड आरओबी के पास पहुंची। इसी दौरान करीब 70 वर्षीय व्यक्ति रेलवे लाइन पार कर रहे थे। ट्रेन की टक्कर लगने के बाद लाइन किनारे गिरने से उनकी मौत हो गई। सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे से लिया।

दस दिन बाद पटवारियों का धरना खत्म

खरखौदा। उपमंडल कार्यालय के प्रांगण में 10 दिन से चल रहा पटवारी व कानूनगो एसोसिएशन का धरना जिला उपायुक्त सुशील सारवान के निर्देशानुसार खत्म हो गया है। विधायक पवन खरखौदा ने वीडियो काल करके हड़ताल को खत्म कराने में अहम भूमिका निभाई। जिला पटवारी व कानूनगो संगठन के प्रधान सन्नी दहिया ने बताया कि जिला उपायुक्त सुशील सारवान व उपमंडल अधिकारी निर्मल नागर के साथ बैठक हुई। उसमें जिन मुद्दों को लेकर धरना दिया गया था। उन सभी मुद्दों पर बातचीत के जरिए हल निकाल लिया गया है। उन्होंने बताया कि जिला प्रधान पर जिन तीन महिलाओं द्वारा बेबुनियाद आरोप लगाए गए थे वह सभी आरोप भी झूठे साबित हुए। उन्होंने बताया कि 10 दिन धरना - प्रदर्शन होने के कारण जो भी आमजन का कामकाज ठप रह गया था। उसको जनता की सेवा के लिए 24 घंटे काम करके पूरा कर लिया जाएगा। सभी पटवारी व कानूनगो अपने काम पर लौट आए हैं।

- विधायक और उपायुक्त ने धरना समाप्त करने के लिए मनाया

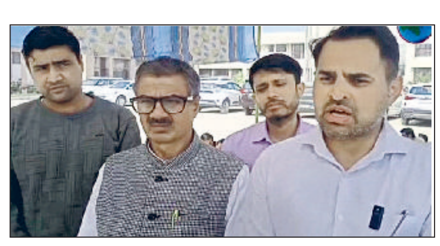

खरखौदा। जानकारी देते एसोसिएशन के सदस्य।

राजपुर में पेयजल लाइन टूटने से सड़क पर बह रहा पेयजल, ग्रामीण बोले- पानी की बर्बादी रोके प्रशासन

गन्नौर। राजपुर गांव में जनस्वास्थ्य विभाग की पेयजल सप्लाई लाइन पिछले करीब एक सप्ताह से टूटी हुई है, जिससे ग्रामीणों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। सप्लाई के दौरान पाइप लाइन से तेज़ी से पानी सड़क पर फैल जाता है और सैकड़ों लीटर पानी बहकर व्यर्थ चला जाता है। ग्रामीणों के अनुसार सुबह और शाम की सप्लाई के समय सड़क पर पानी जमा हो जाता है, जिससे वाहन चालकों को फिसलन का खतरा बना रहता है। पैदल राहगीरों और आसपास के लोगों को भी आवागमन में परेशानी होती है। लगातार पानी बहने से सड़क की हालत भी खराब होने लगी है। ग्रामीण जगदीश, जय नारायण, अनिल, नन्हा व अजय ने बताया कि समस्या की सूचना कई बार विभागीय अधिकारियों को दी जा चुकी है, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। ग्रामीणों ने जनस्वास्थ्य विभाग से मांग की है कि टूटी पाइप लाइन की तुरंत मरम्मत कराई जाए, ताकि पेयजल की बर्बादी रोकी जा सके और लोगों को राहत मिल सके।

गोरड़ की खेल प्रतिभाओं ने जिले का नाम रोशन किया

ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी महिला कबड्डी में दबदबा

साक्षी ने कबड्डी में और भाई आदित्य तोमर ने वेटलिफ्टिंग में जीता गोल्ड

- ग्रामीणों ने साक्षी और आदित्य को सराहा

हरिभूमि न्यूज ▸▸ खरखौदा

ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी सीनियर महिला कबड्डी में उपमंडल के गांव गोरड़ निवासी साक्षी तोमर और उनकी टीम ने स्वर्ण पदक जीतकर अपना स्वर्णिम इतिहास दोहराया है।

यह जानकारी देते हुए समाजसेवी बलराम मास्टर बताया कि 10 दिन पहले भी साक्षी तोमर व उनकी टीम ने हैदराबाद में 72 वें सीनियर नेशनल गेम्स में भी महिला कबड्डी में गोल्ड मेडल जीता था। तब उनकी उपलब्धि पर वाहनों के लंबे काफिले के साथ विजय यात्रा भी निकली गई थी और सम्मान समारोह आयोजित किया गया था। जिसमें क्षेत्र भर के गणमान्य व्यक्तियों ने शिरकत कर खिलाड़ी को प्रोत्साहित किया था। अब पखवाड़े के भीतर अर्थात बैक टू बैक दूसरा गोल्ड मेडल जीत कर साक्षी ने अपने पैतृक गांव गोरड, जिला सोनीपत और हरियाणा राज्य का नाम रोशन किया है। साक्षी के चचेरे भाई आदित्य तोमर ने मोदीनगर यूपी में आयोजित वेटलिफ्टिंग नेशनल चैंपियनशिप में जीत का परचम लहराया है। आदित्य तोमर ने अंडर 18 में 110 किलो वर्ग में 170 किलो वजन उठाकर गोल्ड जीता। साथ ही अंडर 21 में उसने कांस्य जीता। आदित्य तोमर एक ही दिन में 2 मेडल लेने वाले खिलाड़ी बन गए हैं।

पहलवान सुनील ने सीनियर रेसलिंग कप में जीता सोना

गन्नौर। भारतीय कुश्ती महासंघ द्वारा गाजियाबाद के डासना में 12 से 14 फरवरी तक सीनियर रेसलिंग कप 2026 का आयोजन किया गया। शनिवार को पुरुष वर्ग की फ्री स्टाइल प्रतियोगिताएं संपन्न हुईं। डबरपुर गांव के पहलवान सुनील ने 87 किलोग्राम भार वर्ग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। उन्होंने पहले मुकाबले में महाराष्ट्र के सोहनबा को 10-0 से हराया। दूसरे मैच में उत्तर प्रदेश के सचिन को 7-2, तीसरे में दिल्ली के अंकित को 5-1 तथा सेमीफाइनल में चंडीगढ़ के मंजीत को 6-2 से पराजित किया। फाइनल में पंजाब के कर्ण को 8-0 से हराया।

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

24.3% लोगों ने अपनी पहली सैलरी या व्यक्तिगत आय के बाद पहली बार सोना खरीदा, जबकि 23.9% ने इसे निवेश के रूप में चुना। यह ट्रेंड पीढ़ियों के व्यवहार में अंतर भी दिखाता है। जेन जी छोटे और व्यक्तिगत माइलस्टोन से सोने की खरीद शुरू कर रहे हैं, जबकि मिलेनियल्स इसे जीवन की बड़ी घटनाओं और दीर्घकालिक सुरक्षा से जोड़कर देखते हैं।

जेन जी और मिलेनियल्स की पहली पसंद बना सोना

इस समय सोना निवेश का बढ़िया विकल्प बनकर उभर रहा है। जेन जी और मिलेनियल्स यानी युवा भारतीयों का सोने पर भरोसा मजबूत बना हुआ है, लेकिन इसे खरीदने का तरीका धीरे-धीरे बदल रहा है। स्मिटन पल्सएआई के सर्वे में सामने आया है कि सोने की खरीद अब अधिक व्यक्तिगत और छोटी रकम/मात्रा में होने लगी है। 18-39 वर्ष के 5,000 उपभोक्ताओं पर आधारित इस अध्ययन के अनुसार पारंपरिक, परिवार-केंद्रित खरीदारी की जगह अब तर्क-आधारित और व्यक्तिगत फैसलों का महत्व बढ़ रहा है। जेन जी और मिलेनियल्स सोने की खरीद को अब शादी-समारोह से आगे बढ़कर व्यक्तिगत माइलस्टोन और पहली सैलरी जैसे शुरुआती निवेश के रूप में देख रहे हैं।

सुरक्षा के मामले में पहली पसंद

आधुनिक निवेश विकल्पों की बढ़ती पहुंच के बावजूद युवा भारतीयों के लिए सोना अब भी सबसे भरोसेमंद निवेश बना हुआ है। सर्वे के अनुसार यदि आज 25,000 रुपये निवेश करने हों तो 61.9% उत्तरदाता सोने को चुनेंगे। यह आंकड़ा म्यूचुअल फंड (16.6%), फिक्स्ड डिपॉजिट (13%), शेयर बाजार (6.6%) और क्रिप्टो (1.9%) से काफी आगे है। आर्थिक अनिश्चितता के समय भी सोने पर भरोसा कायम है। 65.7% लोगों ने कहा कि बैंक बचत, म्यूचुअल फंड या इक्विटी की तुलना में सोना उन्हें सबसे सुरक्षित विकल्प लगता है। यह ट्रेंड दर्शाता है कि जेन जी और मिलेनियल्स दोनों के लिए सोना अब भी वित्तीय सुरक्षा का प्रमुख सहारा बना हुआ है।

छोटी खरीदारी बन रही नया ट्रेंड

सर्वे से स्पष्ट संकेत मिलता है कि अब सोने की बड़ी और कम अंतराल वाली खरीदारी से हटकर छोटी और नियमित खरीदारी का रुझान तेजी से बढ़ रहा है। हाल की 61.9% खरीद 5 ग्राम से कम की रही, जिसमें 27.5% लोगों ने 2 ग्राम से कम और 34.4% ने 2 से 5 ग्राम के बीच सोना खरीदा। अब 42% परिवार समय-समय पर छोटी मात्रा में सोना खरीदना पसंद कर रहे हैं, जबकि 58% अभी भी एकमुश्त और अवसर आधारित खरीद करते हैं।

परिवार की भूमिका भी महत्वपूर्ण

निवेश के मामले में परिवार की भूमिका अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन सोने की खरीद के फैसले अब तेजी से व्यक्तिगत होते जा रहे हैं। सर्वे के मुताबिक 66.7% उत्तरदाताओं ने कहा कि आज सोना खरीदना मुख्य रूप से व्यक्तिगत और स्वयं प्रेरित निर्णय बन चुका है, न कि केवल पारिवारिक प्रभाव से लिया गया फैसला। 42.3% लोगों ने बताया कि उनके घर में हाल की सोने की खरीद की पहल उन्होंने खुद की, जबकि 40% ने माता-पिता या बड़े परिवार के सदस्यों को इसका श्रेय दिया। यह बदलाव पीढ़ियों के बीच स्पष्ट अंतर को दिखाता है। जेन जी अब कब और कैसे सोना खरीदना है, इसका फैसला खुद लेने में अधिक आत्मविश्वास दिखा रहे हैं और इसे व्यक्तिगत वित्तीय निर्णय मानते हैं। वहीं, मिलेनियल्स अब भी गोल्ड को परिवार की योजना और दीर्घकालिक सुरक्षा के नजरिए से देखते हैं, जहां खरीदारी सामूहिक प्राथमिकताओं से प्रभावित रहती है।

अब शादियों तक सीमित नहीं

दिलचस्प बात यह है कि पहली बार सोना खरीदना अब केवल शादी जैसे अवसरों तक सीमित नहीं रहा। 24.3% लोगों ने अपनी पहली सैलरी या व्यक्तिगत आय के बाद पहली बार सोना खरीदा, जबकि 23.9% ने इसे निवेश के रूप में चुना। यह ट्रेंड पीढ़ियों के व्यवहार में अंतर भी दिखाता है। जेन जी छोटे और व्यक्तिगत माइलस्टोन से सोने की खरीद शुरू कर रहे हैं, जबकि मिलेनियल्स इसे जीवन की बड़ी घटनाओं और दीर्घकालिक सुरक्षा से जोड़कर देखते हैं।

सोने की खरीद में डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग बढ़ा है। इसके बावजूद सोने की खरीदारी में अभी भी पारंपरिक चैनल्स पर भरोसा अधिक है। सर्वे के अनुसार, 38.3% लोग सबसे अधिक सोना बड़ी ब्रांडेड ज्वेलरी चेन से खरीदते हैं, जबकि 34.7% उपभोक्ता स्थानीय ज्वैलर पर भरोसा करते हैं। इसके विपरीत, केवल 5.2% लोग ही ऑनलाइन प्लेटफॉर्म या ऐप के जरिए सोना खरीद रहे हैं। खरीद से जुड़ी चिंताओं में शुद्धता और प्रामाणिकता सबसे बड़ी चिंता के रूप में सामने आई, जिसे 49.4% उत्तरदाताओं ने प्रमुख कारण बताया।

खरीद के बाद पछतावा भी बड़ा संकेत

सर्वे की सबसे महत्वपूर्ण बात यह सामने आई कि सोना खरीदने के बाद बड़ी संख्या में युवा उपभोक्ता असमंजस या पछतावा महसूस करते हैं। करीब 67.1% उत्तरदाताओं ने माना कि उन्हें अक्सर या कभी-कभी सोना खरीदने के बाद पछतावा हुआ है। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह खरीदी गई कीमत (38.9%) रही, जबकि 33.5% लोगों ने ज्वैलरी, सिक्के या डिजिटल गोल्ड जैसे फॉर्मेट को लेकर भ्रम को कारण बताया। वहीं 18.8% ने पर्याप्त जानकारी के अभाव को जिम्मेदार ठहराया। यह ट्रेंड दिखाता है कि सोने पर भरोसा मजबूत है, लेकिन खरीद प्रक्रिया को लेकर युवाओं का आत्मविश्वास अभी भी पूरी तरह विकसित नहीं हुआ है।

भविष्य में सोना खरीदने का इरादा

लोग भविष्य में भी खूब सोना खरीदना चाहते हैं। इस सर्वे में यह भी सामने आया कि भविष्य में सोना खरीदने का इरादा बहुत मजबूत है। 52.7% उत्तरदाता अगले 12 से 24 महीनों में सोना खरीदने के लिए "बहुत संभावना" दिखाते हैं। कुल मिलाकर सोने का स्थान युवा भारतीयों के बीच अब भी अडिग है, हालांकि खरीदारी के तरीके बदल रहे हैं। छोटे निवेश, व्यक्तिगत निर्णय और पारंपरिक खरीदारी चैनल्स में भरोसा दर्शाता है कि सोना का आकर्षण मजबूत है और आने वाले समय में भी यह सुरक्षित निवेश के रूप में रहेगा।

महंगाई के दौर में बच्चों के लिए बनाएं फंड

उच्च शिक्षा के लिए करें मजबूत प्लानिंग

तैयारी

बिजनेस डेस्क

- तेजी से महंगी हो रही पढ़ाई, अभी नहीं संभले तो पड़ेगा भारी
- एसआईपी समेत कई निवेश विकल्पों के बारे में सोचना होगा
- एक संतुलित, बहुआयामी और समयबद्ध रणनीति बनानी होगी

आज के दौर में शिक्षा केवल एक आवश्यकता नहीं, बल्कि भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी बन चुकी है, लेकिन इसके साथ स्कूल और कॉलेज की फीस सामान्य महंगाई दर से कहीं ज्यादा तेजी से बढ़ रही है। इंटरनेशनल बोर्ड, प्रोफेशनल कोर्स, विदेश में पढ़ाई, हॉस्टल और रहने-खाने का खर्च ये सभी मिलकर उच्च शिक्षा को बेहद महंगा बना देते हैं। ऐसे में माता-पिता के लिए यह जरूरी हो गया है कि वे समय रहते अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए व्यवस्थित और दीर्घकालिक वित्तीय योजना बनाएं। अक्सर देखा जाता है कि माता-पिता एक अनुमानित रकम तय कर लेते हैं और हर महीने एसआईपी शुरू कर देते हैं। यह एक अच्छा कदम है, लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल एसआईपी पर निर्भर रहना पर्याप्त है? बदलते आर्थिक हालात और शिक्षा महंगाई को देखते हुए जवाब है नहीं। जरूरत है एक संतुलित, बहुआयामी और समयबद्ध रणनीति की।

जल्दी शुरुआत ही सबसे बड़ा फायदा

उच्च शिक्षा की योजना में समय सबसे महत्वपूर्ण कारक है। यदि बच्चा छोटा है और आप अभी से निवेश शुरू करते हैं, तो कंपाउंडिंग का लाभ कई गुना बढ़ जाता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आप 10–15 साल तक नियमित एसआईपी करते हैं, तो छोटी-छोटी मासिक बचत भी बड़ा फंड बना सकती है। देर से शुरुआत करने पर आपको अधिक रकम निवेश करनी पड़ सकती है, जिससे घरेलू बजट पर दबाव बढ़ सकता है।

एक निवेश विकल्प पर निर्भर न रहें

अक्सर लोग पूरे शिक्षा फंड को इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश कर देते हैं और फीस भरने तक उसे वहीं रखते हैं। लेकिन यदि फीस के समय बाजार में गिरावट आ जाए, तो आपके फंड की वैल्यू घट सकती है। इसलिए जरूरी है कि जैसे-जैसे फीस का समय नजदीक आए, निवेश को सुरक्षित विकल्पों में शिफ्ट किया जाए। उदाहरण के लिए लक्ष्य से 3–4 साल पहले धीरे-धीरे डेट फंड या एफडी में ट्रांसफर करें। अंतिम 1–2 साल में जोखिम बहुत कम कर दें और पैसा लिक्विड या सुरक्षित साधनों में रखें। यह रणनीति आपको बाजार के उतार-चढ़ाव से बचाती है।

शिक्षा महंगाई का सही अनुमान लगाएं

भारत में शिक्षा महंगाई दर सामान्य महंगाई से अधिक, लगभग 8–12% तक मानी जाती है। यदि आज किसी कोर्स की फीस 10 लाख रुपये है, तो 10 साल बाद वही कोर्स 20–25 लाख रुपये तक हो सकता है। इसलिए भविष्य की लागत का अनुमान लगाते समय महंगाई को शामिल करना जरूरी है। केवल वर्तमान फीस देखकर योजना बनाना पर्याप्त नहीं है।

अन्य खर्चों को भी जोड़ें

अक्सर माता-पिता केवल ट्यूशन फीस को ध्यान में रखकर फंड बनाते हैं, जबकि वास्तविक खर्च इससे कहीं अधिक होता है। विशेषकर विदेश में पढ़ाई के मामले में रहने और खाने का खर्च, हेल्थ इंश्योरेंस, यात्रा खर्च, लैपटॉप और अन्य गैजेट्स, एप्लिकेशन फीस, इंटर्नशिप या प्रोजेक्ट खर्च इन सभी खर्चों को जोड़कर ही वास्तविक लक्ष्य तय करें। विदेश में पढ़ाई का खर्च तो डॉलर या अन्य विदेशी मुद्रा में होने के कारण और भी बढ़ सकता है।

एजुकेशन लोन से न घबराएं

कई माता-पिता एजुकेशन लोन को नकारात्मक नजर से देखते हैं, लेकिन यह सोच हमेशा सही नहीं होती। यदि समझदारी से लिया जाए, तो एजुकेशन लोन रिटायरमेंट सेविंग्स को बचाने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास शिक्षा और रिटायरमेंट दोनों के लिए सीमित फंड है, तो शिक्षा के लिए आंशिक लोन लेकर आप अपने रिटायरमेंट कॉर्पस को सुरक्षित रख सकते हैं। इसके अलावा, एजुकेशन लोन पर टैक्स लाभ भी मिलता है और पढ़ाई पूरी होने के बाद बच्चे खुद इसे चुकाने में योगदान दे सकते हैं।

रिटायरमेंट से समझौता न करें

बच्चों की पढ़ाई महत्वपूर्ण है, लेकिन अपनी रिटायरमेंट सुरक्षा को नजरअंदाज करना भविष्य में आर्थिक संकट पैदा कर सकता है। शिक्षा के लिए आप लोन ले सकते हैं, लेकिन रिटायरमेंट के लिए नहीं। इसलिए दोनों लक्ष्यों में संतुलन बनाना जरूरी है।

नियमित समीक्षा करें

हर साल अपनी योजना की समीक्षा करें। यदि आपकी आय बढ़ती है, तो SIP की राशि भी बढ़ाएं। अगर लक्ष्य की लागत बदलती है या बच्चे की रुचि अलग दिशा में जाती है, तो योजना में संशोधन करें।

अनुशासन ही सफलता की कुंजी

बढ़ती महंगाई के इस दौर में बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए पहले से तैयारी करना अनिवार्य हो गया है। केवल बचत नहीं, बल्कि स्मार्ट निवेश, जोखिम प्रबंधन और समय पर समीक्षा ही मजबूत शिक्षा फंड का आधार बनते हैं। जल्दी शुरुआत, विविध निवेश, महंगाई का सही अनुमान और जरूरत पड़ने पर एजुकेशन लोन ये सभी कदम मिलकर आपके बच्चे के सपनों को साकार कर सकते हैं।

प्राइवेट नौकरी वाले जान लें अहम टिप्स

आर्थिक रूप से रहेंगे मजबूत

- अपने वेतन का करीब 20 फीसदी शुरू से ही निवेश करें
- अपना बजट बनाएं, लक्ष्य तय करें और गैरजरूरी खर्चों से बचें
- सैलरी 10% बढ़ती है, तो कम से कम 5% अतिरिक्त निवेश करें
- व्यक्तिगत हेल्थ इंश्योरेंस जरूर लें, यह बीमारी में काम आएगा

सुझाव

बिजनेस डेस्क

प्राइवेट सेक्टर में नौकरी करने वाले लाखों युवाओं के लिए करियर की शुरुआत उत्साह और सपनों से भरी होती है। अच्छी सैलरी, कॉर्पोरेट लाइफस्टाइल और तेजी से बढ़ते अवसर आकर्षित करते हैं, लेकिन इस चमक-दमक के पीछे एक सच्चाई भी है प्राइवेट नौकरी में सरकारी कर्मचारियों जैसी पेंशन, स्थायी सुरक्षा या व्यापक सामाजिक लाभ अक्सर उपलब्ध नहीं होते। ऐसे में यदि वित्तीय योजना मजबूत न हो, तो भविष्य असुरक्षित हो सकता है। करियर की शुरुआत में की गई छोटी वित्तीय गलतियां समय के साथ बड़ी समस्या बन जाती हैं। इसलिए जरूरी है कि शुरुआत से ही सतर्क रहें और कुछ सामान्य लेकिन गंभीर वित्तीय भूलों से बचें।

अनियंत्रित जीवनशैली की शुरुआत

अक्सर युवा नौकरी लगते ही खर्च की आजादी का आनंद लेने लगते हैं। सैलरी आते ही किराया, घूमना-फिरना, गैजेट्स और ऑनलाइन शॉपिंग पर पैसा खर्च हो जाता है। लेकिन यदि आय और खर्च का स्पष्ट बजट न हो, तो बचत पीछे छूट जाती है। वित्तीय स्थिरता की पहली शर्त है बजट बनाना। 50-30-20 फॉर्मूला एक आसान तरीका है। इसमें 50% आय जरूरी खर्चों के लिए, 30% लाइफस्टाइल और शौक के लिए तथा 20% बचत और निवेश के लिए रखा जाता है। समस्या तब होती है जब लोग बचत वाले हिस्से को टाल देते हैं। कई बार दिखावे या सामाजिक दबाव में जरूरत से ज्यादा खर्च कर बैठते हैं। याद रखें, कमाई से ज्यादा जरूरी है पैसे का प्रबंधन।

वेतन बढ़ा, बचत नहीं

प्राइवेट सेक्टर में समय-समय पर इंक्रीमेंट और प्रमोशन मिलते हैं। लेकिन अक्सर देखा गया है कि वेतन बढ़ते ही खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ जाता है। इसे लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन कहते हैं। नई कार, महंगा मोबाइल, ब्रांडेड कपड़े, बार-बार ट्रैवल ये सब बढ़ती आय के साथ जुड़ जाते हैं। नतीजा यह होता है कि बचत की दर स्थिर ही रहती है या घट जाती है। समझदारी यह है कि हर वेतन वृद्धि के साथ निवेश भी बढ़ाया जाए।

निवेश को टालना

अभी तो करियर की शुरुआत है, बाद में निवेश करेंगे यह सोच सबसे खतरनाक है। निवेश में समय सबसे बड़ा हथियार है। जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे, उतना ही कंपाउंडिंग का फायदा मिलेगा। मान लीजिए कोई व्यक्ति 25 साल की उम्र से हर महीने 5,000 रुपये एसआईपी में निवेश करता है और दूसरा 35 साल की उम्र से 10,000 रुपये। लंबे समय में पहले व्यक्ति का फंड अधिक हो सकता है, क्योंकि उसे 10 साल का अतिरिक्त समय मिला। प्राइवेट नौकरी में पेंशन की गारंटी नहीं होती। इसलिए रिटायरमेंट फंड बनाना आपकी जिम्मेदारी है। म्यूचुअल फंड एसआईपी, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य लंबी अवधि के साधनों में नियमित निवेश जरूरी है।

इमरजेंसी फंड की अनदेखी

प्राइवेट सेक्टर में नौकरी की स्थिरता सीमित हो सकती है। अचानक छंटनी, कंपनी बंद होना या व्यक्तिगत कारणों से नौकरी छोड़नी पड़ सकती है। ऐसे समय में यदि इमरजेंसी फंड न हो, तो आपको कर्ज लेना पड़ सकता है या निवेश तोड़ना पड़ सकता है। कम से कम 6 से 9 महीने के खर्च के बराबर राशि रखें।

बीमा को हल्के में लेना

कई लोग सोचते हैं कि कंपनी द्वारा दिया गया ग्रुप हेल्थ इंश्योरेंस पर्याप्त है। लेकिन नौकरी बदलते ही यह सुविधा खत्म हो सकती है। इसलिए व्यक्तिगत हेल्थ इंश्योरेंस लेना जरूरी है। इसके अलावा, यदि परिवार आप पर निर्भर है, तो टर्म लाइफ इंश्योरेंस अनिवार्य है। यह कम प्रीमियम में बड़ी सुरक्षा देता है।

कर्ज का गलत इस्तेमाल

क्रेडिट कार्ड का अत्यधिक उपयोग और पर्सनल लोन लेना भी बड़ी वित्तीय गलती है। 18% से 36% तक ब्याज दर आपकी बचत को खत्म कर सकती है। कर्ज लें तो केवल जरूरी जरूरतों के लिए, जैसे होम लोन।

अनुशासन ही असली सुरक्षा

प्राइवेट नौकरी में अवसर बहुत हैं, लेकिन जोखिम भी कम नहीं। यहां भविष्य की सुरक्षा आपके अपने हाथ में है। बजट बनाना, लाइफस्टाइल पर नियंत्रण, समय पर निवेश, पर्याप्त बीमा और इमरजेंसी फंड ये पांच स्तंभ आपकी आर्थिक मजबूती की नींव हैं। वहीं, आज का अनुशासन आपको आर्थिक स्वतंत्रता और मानसिक शांति दे सकता है।

शेयर बाजार की बदहाली से इक्विटी म्यूचुअल फंड में घटा निवेश

जानकारी

बिजनेस डेस्क

- गोल्ड ईटीएफ में निवेश 106% बढ़ा
- शेयर बाजार में इन दिनों खूब दिख रही उठापटक
- आम निवेशकों का सेंटिमेंट प्रभावित हुआ

शेयर बाजार में इन दिनों उठा-पटक का दौर चल रहा है। किसी दिन शेयर बाजार का सूचकांक कुलांचे भरते हुए ऊपर चढ़ जाता है तो किसी दिन जमीन पर लोटने लगता है। तभी तो इस साल के पहले महीने यानी जनवरी 2026 में इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश थोड़ा कम हुआ। स्थिति यह रही कि इस महीने गोल्ड ईटीएफ में इक्विटी म्यूचुअल फंड के मुकाबले ज्यादा निवेश हुआ। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स ऑफ इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों के मुताबिक जनवरी महीने के दौरान इक्विटी म्यूचुल फंड्स में 24,028 करोड़ रुपये आए। इससे एक महीने पहले यानी दिसंबर 2025 के दौरान 28,054 करोड़ रुपये आए थे। मतलब कि इस महीने निवेश में 14% की कमी आई है। यदि साल दर साल के आधार पर देखें तो जनवरी 2025 की तुलना में इस साल जनवरी में यह गिरावट 39% रही है। पिछले साल जनवरी के दौरान इस फंड में 39,687 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था।

इक्विटी फंड्स में कौन पहली पसंद

जनवरी के दौरान अलग-अलग तरह के इक्विटी फंडों में, फ्लेक्सीकैप फंड निवेशकों की पहली पसंद बने रहे। इनमें सबसे ज्यादा 7,672 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद मिडकैप फंड में 3,185 करोड़ रुपये और लार्ज एंड मिड-कैप फंड में 3,181 करोड़ रुपये का निवेश आया। स्मॉलकैप फंड में 2,942 करोड़ रुपये आए, लेकिन ईएलएसएस फंड से निवेशकों ने 593 करोड़ रुपये निकाल लिए। अगर पिछले महीने से तुलना करें, तो फोकस्ड फंड में निवेश 47% बढ़ा। दिसंबर 2025 में इनमें 1,056 करोड़ रुपये आए थे, जो जनवरी 2026 में बढ़कर 1,556 करोड़ रुपये हो गए। लार्जकैप फंड और सेक्टोरल/थीमैटिक फंड में भी पिछले महीने की तुलना में क्रमशः 28% और 10% ज्यादा निवेश आया। वहीं, मिड-कैप और स्मॉल-कैप फंड में निवेश पिछले महीने के मुकाबले 24% और 23% घट गया।

डेट फंड का चला जादू

जनवरी 2026 के दौरान डेट फंड में 74,827 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह अच्छी खबर है क्योंकि पिछले दो महीनों (नवंबर और दिसंबर 2025) में डेट फंड से कुल 1.58 लाख करोड़ रुपये बाहर चले गए थे। पिछले साल जनवरी की तुलना में इस साल डेट फंड में निवेश 42% कम रहा, जब 1.28 लाख करोड़ रुपये आए थे। डेट फंड की 16 अलग-अलग श्रेणियों में से, ओवरनाइट फंड में सबसे ज्यादा 46,280 करोड़ रुपये का निवेश आया। वहीं, कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड से 11,472 करोड़ रुपये निकाल लिए गए। लिक्विड फंड में 30,681 करोड़ रुपये और मनी मार्केट फंड में 12,763 करोड़ रुपये का निवेश आया।

हाइब्रिड फंड में भी रौनक

बीते जनवरी महीने के दौरान हाइब्रिड फंड में 17,356 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह दिसंबर 2025 के 10,755 करोड़ रुपये की तुलना में 61% ज्यादा है। पिछले साल जनवरी 2025 की तुलना में यह आंकड़ा 98% बढ़ा है, जब 8,767 करोड़ रुपये का निवेश आया था। हाइब्रिड फंड की छह श्रेणियों में से, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड में सबसे ज्यादा 10,485 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद आर्बिट्राज फंड में 3,293 करोड़ रुपये आए। आर्बिट्राज फंड में तो पिछले महीने के मुकाबले निवेश में 2,507% की भारी बढ़ोतरी हुई, जो दिसंबर 2025 में सिर्फ 126 करोड़ रुपये था। हालांकि, इक्विटी सेविंग्स फंड और कंजरवेटिव हाइब्रिड फंड में पिछले महीने के मुकाबले क्रमशः 81% और 35% की गिरावट आई।

ईटीएफ में खूब हुआ निवेश

अन्य स्कीमों, जिनमें ईटीएफ और इंडेक्स फंड जैसे पैसिव फंड शामिल हैं, में जनवरी में 39,954 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह दिसंबर 2025 के 26,723 करोड़ रुपये से 50% ज्यादा है। गोल्ड ईटीएफ में तो सबसे ज्यादा 24,039 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो पिछले महीने के मुकाबले 106% ज्यादा है। हो सकता है कि सोने की कीमतों में तेज बढ़ोतरी की वजह से निवेशक इस ओर आकर्षित हुए। अन्य ईटीएफ में 15,005 करोड़ रुपये का निवेश आया। विदेशों में निवेश करने वाले फंड-ऑफ-फंड में भी भारी उछाल देखा गया।

चालीस की उम्र में कर रहे हैं रिटायरमेंट प्लानिंग तो अपना लें ये अहम टिप्स

इस उम्र में भविष्य की आर्थिक सुरक्षा की असली तैयारी शुरू होती हैं, अच्छी रणनीति बनाकर निवेश करेंगे तो नहीं होगी परेशानी, भविष्य सुरक्षित रहेगा।

शुरुआत

बिजनेस डेस्क

सबसे पहले आय, खर्च, ईएमआई व निवेश की स्थिति समझें

रिटायरमेंट प्लानिंग अक्सर लोग 50 की उम्र के बाद शुरू करने की सोचते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि 40 की उम्र वह मोड़ है, जहां से भविष्य की आर्थिक सुरक्षा की असली तैयारी शुरू होती है। यह उम्र आमतौर पर करियर का सबसे स्थिर और आय का सबसे मजबूत दौर होता है। आमदनी अपने शिखर की ओर बढ़ रही होती है, लेकिन साथ ही जिम्मेदारियां भी बढ़ जाती हैं। बच्चों की पढ़ाई, होम लोन की ईएमआई, माता-पिता की देखभाल और जीवनशैली से जुड़े खर्च। ऐसे में यदि आपने अब तक रिटायरमेंट के बारे में गंभीरता से नहीं सोचा है, तो अब वक्त है इसे प्राथमिकता देने का। 40 की उम्र में रिटायरमेंट प्लानिंग का मतलब है सीमित समय में अधिक प्रभावी रणनीति अपनाना। आपके पास अब 20–25 साल का कार्यकाल बचा हो सकता है। इस दौरान सही निवेश, अनुशासन और जोखिम प्रबंधन से आप एक मजबूत रिटायरमेंट कॉर्पस तैयार कर सकते हैं। सबसे पहले अपनी आय, खर्च, ईएमआई, मौजूदा निवेश और बीमा की स्थिति को स्पष्ट रूप से समझें। हर महीने कितना पैसा बचता है और कितना खर्च होता है, इसका विस्तृत विश्लेषण करें। इसके साथ ही महंगाई दर, भविष्य के मेडिकल खर्च और रिटायरमेंट के बाद की जीवनशैली को ध्यान में रखते हुए यह अनुमान लगाएं कि आपको कितनी रकम की जरूरत होगी। विशेषज्ञ मानते हैं कि रिटायरमेंट के बाद भी वर्तमान खर्च का कम से कम 70–80% हर महीने चाहिए होगा।

रिटायरमेंट को प्राथमिकता बनाएं

अक्सर लोग बच्चों की पढ़ाई या घर खरीदने को प्राथमिकता देते हैं और रिटायरमेंट को टालते रहते हैं। लेकिन याद रखें, बच्चों को शिक्षा के लिए लोन मिल सकता है, रिटायरमेंट के लिए नहीं। ईपीएफ, पीपीएफ, एनपीएस और म्यूचुअल फंड एसआईपी जैसे साधनों में नियमित निवेश बढ़ाएं। कोशिश करें कि अपनी आय का कम से कम 15–25% हिस्सा रिटायरमेंट के लिए सुरक्षित रखें। यदि संभव हो तो हर साल आय बढ़ने के साथ निवेश राशि भी बढ़ाएं।

महंगे कर्ज से जल्दी छुटकारा पाएं

क्रेडिट कार्ड और पर्सनल लोन पर 12% से 24% तक ब्याज देना आपकी संपत्ति निर्माण की क्षमता को कमजोर करता है। ऐसे कर्ज को प्राथमिकता से खत्म करें। होम लोन अपेक्षाकृत सस्ता होता है, लेकिन यदि अतिरिक्त राशि उपलब्ध हो तो प्री-पेमेंट जरूर करें। कर्ज मुक्त जीवन रिटायरमेंट की दिशा में बड़ा कदम है।

इमरजेंसी फंड बनाना न भूलें

रिटायरमेंट निवेश के साथ-साथ एक मजबूत इमरजेंसी फंड होना भी जरूरी है। कम से कम 6 से 9 महीने के खर्च के बराबर राशि सेविंग अकाउंट या लिक्विड फंड में रखें। यह फंड अचानक नौकरी छूटने, बीमारी या किसी अप्रत्याशित खर्च के समय सुरक्षा कवच का काम करेगा। इससे आपको निवेश तोड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

टैक्स प्लानिंग से बढ़ाएं बचत

सही टैक्स प्लानिंग से आप अपनी निवेश क्षमता बढ़ा सकते हैं। आयकर की धारा 80सी, एनपीएस में अतिरिक्त निवेश (80सीसीडी(1बी), हेल्थ इंश्योरेंस (80डी) और कैपिटल गेन प्लानिंग का लाभ उठाएं। टैक्स बचत केवल बचत नहीं है, बल्कि आपके भविष्य के लिए अतिरिक्त निवेश का अवसर है।

पर्याप्त बीमा सुरक्षा सुनिश्चित करें

40 की उम्र में परिवार आप पर निर्भर होता है। इसलिए पर्याप्त टर्म लाइफ इंश्योरेंस जरूर लें, जो कम से कम आपकी वार्षिक आय का 10–15 गुना हो। साथ ही, एक अच्छा हेल्थ इंश्योरेंस प्लान भी रखें, क्योंकि उम्र बढ़ने के साथ मेडिकल खर्च तेजी से बढ़ते हैं। समय-समय पर अपनी पॉलिसी की समीक्षा करना भी जरूरी है। बच्चों की शिक्षा एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है, लेकिन इसे रिटायरमेंट की कीमत पर पूरा करना समझदारी नहीं है। शिक्षा के लिए अलग निवेश योजना बनाएं, जैसे कि इक्विटी म्यूचुअल फंड या चाइल्ड प्लान। ध्यान रखें कि लंबी उम्र एक बड़ा वित्तीय जोखिम है। यदि रिटायरमेंट फंड पर्याप्त नहीं होगा, तो बाद में आर्थिक निर्भरता की स्थिति बन सकती है।

नियमित समीक्षा सफलता की कुंजी

रिटायरमेंट प्लानिंग एक बार का निर्णय नहीं, बल्कि निरंतर प्रक्रिया है। हर साल अपने निवेश, खर्च और लक्ष्यों की समीक्षा करें। यदि आपकी आय बढ़ती है या जिम्मेदारियां कम होती हैं, तो निवेश की गति बढ़ाएं। पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट का संतुलन उम्र के अनुसार रखें। जैसे-जैसे रिटायरमेंट नजदीक आए, जोखिम कम करते जाएं।

स्पष्ट रणनीति अपनाएं

40 की उम्र में रिटायरमेंट प्लानिंग शुरू करना देर नहीं है, बशर्ते आप अनुशासित और स्पष्ट रणनीति अपनाएं। सही दिशा में उठाया गया कदम आपको आर्थिक स्वतंत्रता और सम्मानजनक जीवन दे सकता है। याद रखें, रिटायरमेंट कोई अंत नहीं, बल्कि जीवन का नया अध्याय है और इसकी तैयारी आज से ही शुरू होती है।

खबर संक्षेप

बच्चों ने इंग्लिश सॉन्ग पर मनमोहक डांस किया

सोनीपत। ऋषिकुल वर्ल्ड एकेडमी में प्राथमिक वर्ग के छात्रों द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्राइमरी कक्षा के छात्रों द्वारा "वंडर्स ऑफ फेयरी " थीम पर शानदार प्रस्तुति देकर सभी का दिल जीत लिया। बच्चों ने इंग्लिश सॉन्ग पर मनमोहक डांस प्रस्तुत किया, जिसमें फेयरी वर्ल्ड की अलग-अलग झलकियां देखने को मिलीं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विद्यालय संस्थापक एसके शर्मा, प्रबंधक नीरज शर्मा व निर्देशिका रीमा शर्मा के साथ प्रधानाचार्य चंचल शर्मा, मीनू उपस्थिति रहीं। बच्चों ने परियों की दुनिया को बेहद खूबसूरत अंदाज़ में मंच पर जीवंत कर दिया। रंग-बिरंगे कॉस्ट्यूम, आकर्षक प्रॉप्स ने पूरे माहौल को जादुई बना दिया।

पार्टी कार्यकर्ता संगठन की असली ताकतः

गन्नौर। इनेलो नेता सुरेश त्यागी ने इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय सिंह चौटाला के जन्मदिवस पर गुरुग्राम स्थित उनके आवास पर पहुंचकर उन्हें बधाई दी। इस दौरान उन्होंने पार्टी और संगठन की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने का भरोसा दिलाया। अभय चौटाला ने सुरेश त्यागी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि पार्टी कार्यकर्ता ही संगठन की असली ताकत हैं और सभी को मिलकर इनेलो को और मजबूत बनाने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। जनसंपर्क अभियानों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए। मौके पर संगठन की मजबूती और आगामी रणनीति को लेकर भी संक्षिप्त चर्चा हुई।

पूर्व पार्षद अंकित मल्होत्रा ने कथावाचक सुधीर महाराज से लिया आशीर्वाद

शिव महापुराण से समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार

विधिवत रूप से कथा श्रवण किया और आयोजन समिति के प्रयासों को सराहा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ गन्नौर

पूर्व पार्षद अंकित मल्होत्रा ने चौधरी लहरी सिंह पार्क में आयोजित हो रही शिव महापुराण कथा में पहुंचकर कथा वाचक सुधीर महाराज से आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान उन्होंने विधिवत रूप से कथा श्रवण किया और आयोजन समिति के प्रयासों की सराहना की। कथा स्थल पर पहुंचने पर शिव महापुराण कथा आयोजन समिति के सदस्यों ने अंकित मल्होत्रा का स्वागत किया। कथावाचक सुधीर महाराज एवं आयोजक समिति द्वारा अंकित मल्होत्रा तथा समाजसेवी हरीश वाधवा को आशीर्वाद स्वरूप स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। अंकित मल्होत्रा ने आयोजन समिति को बधाई देते हुए कहा कि शिव महापुराण जैसी कथाओं का आयोजन समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। उन्होंने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजन लोगों को भगवान शिव की भक्ति के साथ-साथ सत्य, सदाचार और सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। शिव महापुराण कथा के माध्यम से समाज में संस्कारों को मजबूत करने का कार्य होता है, जो आज के समय में अत्यंत आवश्यक है।

गन्नौर। शिव महापुराण में कथावाचक सुधीर महाराज पूर्व पार्षद अंकित मल्होत्रा व हरीश वाधवा को आशीर्वाद स्वरूप स्मृति चिन्ह देते हुए। फोटो : हरिभूमि

खास बातें

- धार्मिक आयोजन लोगों को भगवान शिव की भक्ति के साथ-साथ सत्य, सदाचार और सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं
- कथावाचक सुधीर महाराज एवं आयोजक समिति ने अंकित मल्होत्रा तथा समाजसेवी हरीश वाधवा को आशीर्वाद स्वरूप स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया

सोनीपत। देवडू रोड स्थित दिल्ली विद्यापीठ में शिवरात्रि के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

दिल्ली विद्यापीठ में महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किए रंगारंग कार्यक्रम

सोनीपत। देवडू रोड स्थित दिल्ली विद्यापीठ में शिवरात्रि के उपलक्ष्य में बम बम भोले की गूंज के साथ सांस्कृतिक, रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुति व जनसेवा के लिए निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया गया। कार्यक्रम में यशिका, दुर्वाग, चेष्टा, ट्विंकल, काशवी, आस्था, तृप्शा नमन, सनाया, दीक्षा, सांची, तान्या ने शिव-पार्वती, गणेश की वेशभूषा में शिव का वंदन किया करो, बम बम भोले, पार्वती बोली शंकर से आदि गीतों पर रंगारंग प्रस्तुति दी। जनकल्याण के उद्देश्य से विद्यालय में लगाए गए शिविर में बच्चों व अभिभावकों के स्वास्थ्य की जांच की गई। विद्यालय संचालक वीर सिंह सैनी ने सभी को शिवरात्रि की शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों की प्रतिभा को बाहर लाने व निखारने के लिए गुरुओं की आवश्यकता होती है। शिवरात्रि के अवसर पर नर सेवा ही नारायण सेवा की लोकोक्ति को चरितार्थ करने के उद्देश्य से विद्यालय में शिव शंकर की उपासना के रंगारंग कार्यक्रमों के साथ शिविर लगाया गया। प्रधानाचार्य आराधना ग्रोवर सभी को चिकित्सक के परामर्श को अमल में लाने का संकल्प दिलाया।

गन्नौर। हरियाणा कला परिषद के रोहतक मंडल के कलाकार सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देते हुए। फोटो : हरिभूमि

धर्म, अध्यात्म, शिव स्तुति और हरियाणवी संस्कृति पर आधारित मनमोहक प्रस्तुतियां दीं

- श्रद्धालुओं ने विधिवत पूजा-अर्चना की व हवन में आहुति अर्पित की

गन्नौर। खेड़ी गुज्जर स्थित सतकुंभा तीर्थ में शनिवार को मुख्य रुद्र महायज्ञ एवं भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर विधिवत पूजा-अर्चना की और हवन में आहुति अर्पित की। पीठाधीश्वर महंत राजेश स्वरूप ने बताया कि पिछले 10–11 वर्षों से यह उत्सव निरंतर आयोजित किया जा रहा है। धाम पर आयोजित रुद्र महायज्ञ में श्रद्धालु बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं और आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने का संकल्प ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि सतकुंभा धाम आज देश ही नहीं, बल्कि विश्व स्तर पर भी अपनी पहचान बना रहा है तथा यह मंच सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जागरण का माध्यम बन चुका है। हरियाणा कला परिषद के रोहतक मंडल से मुकेश दल ने धर्म, अध्यात्म, शिव स्तुति और हरियाणवी संस्कृति पर आधारित मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। वेदाचार्य श्रीकांत रतूरी, शिवम कौशिक और संदीप ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हवन संपन्न कराया।

नन्हे 'शिव-पार्वती' की प्रस्तुतियों ने मोहा मन

- भक्ति और उत्साह का संगम, हर-हर महादेव से गूंजा स्कूल परिसर
- साउथ पॉइंट ग्रुप के चेयरमैन दिलबाग सिंह खत्री ने विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों की सराहना

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

साउथ पॉइंट स्कूल में महाशिवरात्रि का पर्व अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल के नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों ने भगवान शिव और माता पार्वती की मनमोहक वेशभूषा धारण कर मंच पर अपनी प्रतिभा बिखेरी। नन्हे कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए भजन और नृत्य ने उपस्थित सभी लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने न केवल शानदार प्रस्तुतियां दीं, बल्कि महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक महत्व को भी समझा। विद्यालय के प्रांगण में चारों ओर उत्साह का वातावरण था और बच्चों के उत्साह को देखकर अभिभावक व शिक्षक भावविभोर हो उठे। साउथ पॉइंट ग्रुप के चेयरमैन दिलबाग सिंह खत्री सहित स्कूल के सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की सराहना की और बच्चों का मनोबल बढ़ाया। चेयरमैन दिलबाग सिंह खत्री ने कहा कि बच्चे हमारी संस्कृति के ध्वजवाहक हैं। शिव-पार्वती के रूप में उनकी यह प्रस्तुति दर्शाती है कि हमारी जड़ें कितनी गहरी और संस्कारित हैं। एग्जीक्यूटिव चेयरमैन रोहित खत्री व वाइस चेयरपर्सन वर्तिका खत्री ने कहा कि कला और अध्यात्म का यह संगम बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है। उनकी मासूमियत ने आज साक्षात शिवत्व को जमीन पर उतार दिया। सीईओ भावना कालरा व कार्यकारी अधिकारी डा. ममता सचदेवा ने कहा कि धार्मिक उत्सव हमें अनुशासन और धैर्य सिखाते हैं।

सोनीपत। साउथ पॉइंट स्कूल में महाशिवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुति देते नन्हे विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

जेबीएच स्कूल के विद्यार्थियों ने भक्ति के गीतों पर नृत्य कर दी सुंदर प्रस्तुति

- हिंदू धर्म में महाशिवरात्रि का विशेष महत्व : सुमन दहिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ खरखौदा

दिल्ली मार्ग स्थित जेबीएच स्कूल में शिवरात्रि पर्व का आयोजन किया।जिसका शुभारंभ करके प्रधानाचार्या सुमन दहिया ने बताया कि हिंदू धर्म में महाशिवरात्रि का विशेष महत्व है। यह त्यौहार भगवान शिव को समर्पित है। शास्त्रों के अनुसार इस दिन शिव जी का प्राकटय हुआ था। साथ ही शिव जी का विवाह भी इस दिन मनाया जाता है। यह मान्यता है जो व्यक्ति इस दिन व्रत रखकर भगवान शिव की आराधना करता है, भोलेनाथ उसके सभी कष्ट हर लेते हैं ।कार्यक्रम की शुरुआत शिवलिंग के समक्ष दीप प्रज्वलित कर की गई। विद्यार्थियों ने शिव स्तोत्रम के श्लोक का पाठ किया। कार्यक्रम में मौजूद अभिभावकों ने तालियां बजाकर बच्चों का हौसला बढ़ाया। विद्यार्थियों ने भक्ति गीतों पर नृत्य करके प्रस्तुति दी। बाद में भगवान शिव की भव्य आरती की गई। इस मौके पर कविता पांचाल, आशीष छिक्कारा, कविता गर्ग, ज्योति शर्मा, पूजा दहिया, मंजू दहिया, अचित्रा पंवार, ज्योति बरेजा, मनजीत दहिया, लक्ष्य दहिया आदि अध्यापक मौजूद रहे।

खरखौदा। भगवान शिव की आराधना करते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

विद्यार्थियों ने हासिल किया पहला स्थान

- सोनीपत स्टार्टअप समिट 4.0 में ब्राइट स्कॉलर के विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

ब्राइट स्कॉलर सीनियर सेकेंडरी स्कूल सोनीपत के क्लास 7 से 11 तक के स्टूडेंट्स ने हरियाणा के आईआईटी दिल्ली टेक्नोपार्क में आयोजित सोनीपत स्टार्टअप समिट 4.0 – इंडस्ट्री एक्सेलेरेशन एडिशन में हिस्सा लिया। इस समिट ने स्टूडेंट्स को स्टार्टअप्स, नई टेक्नोलॉजी, इनोवेटिव एग्ज़िबिट्स और एंटरप्रेन्योरशिप के मौकों की दुनिया को एक्सप्लोर करने के लिए एक प्लेटफॉर्म दिया। स्टार्टअप फाउंडर्स, इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स और इनोवेटर्स के साथ विशेष बातचीत की, जिससे उन्हें वास्तविक जीवन का अनुभव और आइडियाज़ को असरदार प्रोडक्ट्स में बदलने के बारे में जानकारी मिली। मशहूर एटीएल स्टूडेंट टेक्नोलॉजी शोकेस के दौरान, ब्राइट स्कॉलर सीनियर सेकेंडरी स्कूल की दो टीमों ने बड़े कॉन्फिडेंस और क्रिएटिविटी के साथ अपने इनोवेटिव आइडिया पेश किए और आयुष और हृदयांश (क्लास 8), चैतन्य (क्लास 9) ने अपने शानदार इनोवेशन के लिए पहला स्थान हासिल किया और 25,000 का नकद पुरस्कार जीता। विद्यार्थियों को मोहित शुक्ला और मनीषा ने गाइड किया, जिनके गाइडेंस और हौसला बढ़ाने ने इस कामयाबी में अहम भूमिका निभाई।

सोनीपत। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए।

एक्स्ट्रा वैंगेजा-30 मॉडल प्रदर्शनी में प्रस्तुत किए 110 मॉडल

गोहाना। गोहाना-जींद मार्ग स्थित ओम पब्लिक स्कूल में शनिवार को एक्स्ट्रा वैंगेजा-30 मॉडल प्रदर्शनी आयोजित की गई। प्रदर्शनी में कक्षा छठी से कक्षा आठवीं तक के 700 विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों से संबंधित 110 मॉडल प्रस्तुत करके अपनी प्रतिभा दिखाई। प्रदर्शनी की मुख्य अतिथि नगर परिषद गोहाना की चेयरपर्सन रजनी विरमानी और विशिष्ट अतिथि उप चेयरपर्सन राजबाला मलिक थीं। मार्गदर्शन स्कूल की निदेशक निर्मल लाठर ने किया। अध्यक्षता स्कूल के प्राचार्य डॉ. मंजीत खास ने की और संयोजन उप प्राचार्या रेखा बजाज का रहा। प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कंप्यूटर व कला से संबंधित मॉडल प्रस्तुत करके अपनी रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

पुलवामा हमले में शहीद मां भारती के 40 वीर सपूतों की याद में 25 युवाओं ने किया रक्तदान

- निवर्तमान मेयर राजीव जैन, राष्ट्रीय शिक्षक अवार्डी सुनीता मुख्यतिथि रहे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

क्राइम कंट्रोल एंड ह्यूमन राईटस ऑर्गेनाइजेशन की ओर से पुलवामा हमले में शहीद हुए मां भारती के 40 वीर सपूतों की याद में दिल्ली विद्यापीठ स्कूल में रक्तदान शिविर लगाया गया। मुख्य अतिथि के रूप में निवर्तमान मेयर राजीव जैन, राष्ट्रीय शिक्षक अवार्डी सुनीता ढुल ने दीप प्रज्वलित कर शिविर का शुभारंभ किया, वीर सपूतों के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। शिविर में रोटरी ब्लड बैंक के सहयोग से 25 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। मुख्य अतिथि राजीव जैन ने युवाओं को संदेश देते हुए बताया कि 14 फरवरी 2019 को देश के 40 वीर सपूतों ने भारत मां की सेवा में रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी। क्रांतिकारियों के पदचिन्हों पर चलकर देश व समाज की सेवा करें । रक्तदान महादान है । ऐसे कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। यह शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि है। हमें उन्हें सदैव याद रखना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षक अवॉर्डी सुनीता ढुल ने रक्तदान कर श्रद्धांजलि अर्पित की। जीवीएम कॉलेज की एनसीसी की स्वयंसेविकाओं ने शिविर में सहयोग किया।

सोनीपत। दिल्ली विद्यापीठ में शिविर के दौरान निवर्तमान मेयर राजीव जैन का स्वागत करते आयोजक।

जीवीएम गर्ल्स कॉलेज में जागरूकता सत्र का आयोजन

एंटीबायोटिक्स का अत्यधिक उपयोग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

समाज में उपयोग के प्रति जागरूकता फैलाने का आह्वान किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

जीवीएम गर्ल्स कॉलेज में एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस (एएमआर) एवं एंटीबायोटिक्स के जिम्मेदार उपयोग विषय पर एक जागरूकता सत्र आयोजित किया गया। कार्यक्रम इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के सहयोग से संस्थान की अध्यक्ष डॉ ओपी परूथी के मार्गदर्शन तथा प्राचार्या डा. मंजुला स्पाह की देखरेख में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की संयोजक डॉ. निहारिका रहीं। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डा. अंकुर डेम्बला, जो दरिया राम हॉस्पिटल से संबद्ध हैं, ने लगभग 100 छात्राओं को संबोधित किया। उन्होंने एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस की बढ़ती वैश्विक समस्या पर प्रकाश डालते बताया कि एंटीबायोटिक्स का गलत एवं अत्यधिक उपयोग गंभीर स्वास्थ्य जोखिम पैदा कर सकता है और भविष्य में सामान्य संक्रमणों का उपचार भी कठिन बना सकता है। उन्होंने छात्राओं को सलाह दी कि एंटीबायोटिक्स केवल चिकित्सकीय परामर्श पर ही लें तथा डॉक्टर द्वारा निर्धारित पूरा कोर्स अवश्य पूरा करें। साथ ही, समाज में एंटीबायोटिक्स के जिम्मेदार उपयोग के प्रति जागरूकता फैलाने का आह्वान किया। इस अवसर पर डा. किरण कपूर, मीनू, पल्लवी एवं कुसुम भी उपस्थित रहीं।

सोनीपत। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं को जागरूक करते हुए वक्ता। फोटो : हरिभूमि

लर्निंग मेला लगाकर प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किए मॉडल

- गेटवे इंटरनेशनल स्कूल में किया पीबीएल कल्मिनेशन का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

गेटवे इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को पीबीएल कल्मिनेशन (लर्निंग मेला) का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा तीसरी से आठवीं तक के विद्यार्थियों ने अनुभव आधारित शिक्षण के अंतर्गत अलग-अलग कक्षाओं के अनुसार अपनी अधिगम यात्रा की प्रस्तुति दी। तीसरी कक्षा के छात्रों ने स्काई एंड टेक्स्टाइल, चौथी कक्षा के छात्रों ने फार्म टू प्लेट, पांचवी कक्षा के छात्रों ने फूड प्रिसर्वेशन जैसे विषय के अंतर्गत अपनी भागीदारी एवं सीखने की प्रतिभा को दर्शाया। छठी कक्षा के छात्रों ने भारत के विकसित गांवो की कहानी को प्रस्तुत किया। इसके अलावा कक्षा सातवीं ने नदियों एवं नदियों के संरक्षण विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। वहीं कक्षा आठवीं ने रिर्सोस प्रोजेक्ट के अंतर्गत न सिर्फ अपनी अधिगम यात्रा को प्रस्तुत किया, बल्कि उन्होंने स्वयं के बनाए शुद्ध प्राकृतिक उत्पाद हर्बल साबुन व गुलाल की भी प्रदर्शनी लगाई, जिसे आतिथियों ने काफी सराहा। वहीं विद्यालय में रंगारंग एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने इस लर्निंग मेले को और भी रोचक बनाया।

सोनीपत। गेटवे इंटरनेशनल स्कूल में प्रदर्शनी के दौरान अपना मॉडल प्रस्तुत करते विद्यार्थी।

खबर संक्षेप

शिविर में 32 लोगों ने किया रक्तदान

खरखौदा। पुलवामा शहीदों की पावन स्मृति में थाना खुर्द स्थित द स्टेनफोर्ड स्कूल में जीवन ज्योति जनकल्याण सेवा समिति एवं मामन सिंह नंबरदार एजुकेशन ट्रस्ट द्वारा 16 वां रक्तदान शिविर लगाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व डीटीओ रेड क्रॉस सोनीपत धर्मबीर दहिया, ब्लड बैंक इंचार्ज महावीर पहल मौजूद रहे। रक्तदान शिविर में 32 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। रक्त संग्रह के लिए पी. जी. आई. खानपुर सोनीपत की टीम द्वारा रक्त एकत्रित किया गया। जीवन ज्योति जनकल्याण सेवा समिति के अध्यक्ष सतेन्द्र दहिया ने बताया कि संस्था समय-समय पर रक्तदान शिविरों का आयोजन करती रहती है। हर आदमी को कम से कम 3 महीने में एक बार रक्तदान अवश्य करना चाहिए, जिससे किसी की जान बचाई जा सके। इसलिए हर एक स्वस्थ आदमी को रक्तदान करते रहना चाहिए।

सैदपुर गोशाला में आधुनिक गोशेड का लोकार्पण

खरखौदा। सैदपुर स्थित गोशाला, जो आसपास के आठ गांवों की आस्था और सेवा का केंद्र है, में वार्षिक समारोह के अवसर पर एक अत्याधुनिक गौ शेड का लोकार्पण एवं हस्तांतरण किया गया। यह गौ शेड मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड द्वारा निर्मित कराया गया है। समारोह के दौरान कंपनी के अधिकारी विक्रम सरिन, मित्सुताका सुमिदा एवं कर्नल डॉ. राजबीर सिंह ने ग्रामीणों, गोशाला समिति के सदस्यों एवं गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में गोशेड का विधिवत उद्घाटन एवं हस्तांतरण किया। इस अवसर पर ग्रामीणों ने बताया कि मारुति सुजुकी कंपनी द्वारा गौवंश की बेहतर देखभाल और संरक्षण को ध्यान में रखते हुए अत्यंत उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री से इस गोशेड का निर्माण कराया गया है। नवनिर्मित गोशेड की लंबाई 37 मीटर, चौड़ाई 12.5 मीटर तथा ऊंचाई 5 मीटर है, जो पर्याप्त वेंटिलेशन, सुरक्षा और सुविधा प्रदान करता है।

वेंगी स्कीम के तहत मिली ग्रांट, लोगों को मिलेगी सहूलियत

मोहन नगर की गलियों का एक करोड़ रुपये से होगा कायाकल्प

- विधायक निखिल मदान व मेयर राजीव जैन ने नारियल तोड़कर किया शुभारंभ
- जल्द ही 8 करोड़ रुपये से विधायक निधि कोष से शुरू होंगे विकास कार्य: मदान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

विधायक निखिल मदान और पूर्व मेयर राजीव जैन शनिवार को वार्ड नं 14 के मोहन नगर में 33 फूटे बाई पास पर पहुंचे जहां उन्होंने नारियल तोड़कर विकास कार्यों का शुभारंभ किया। विधायक निखिल मदान ने बताया कि वेंगी स्कीम के तहत विधायक निधि कोष से आज लगभग 98.50 लाख रुपए की लागत से वार्ड नं 14 के मोहन नगर में कच्ची पड़ी विभिन्न गलियों को इंटरलॉकिंग टाइल्स से पक्का करने के कार्य को शुरू करवाया गया है। इस कार्य में सभी कच्ची पड़ी गलियों को इंटरलॉकिंग टाइल्स द्वारा पक्का किया जाएगा। विधायक निखिल मदन ने बताया कि मोहन नगर की कुछ गलियां काफी समय से कच्ची पड़ी थी, जिन्हें हाल ही में सरकार द्वारा वैध घोषित किया गया है, ऐसी सभी गलियों को पक्का किया जाएगा।

इसके साथ ही आने वाले समय में विधायक कोष से लगभग 8 करोड़ रु के विकास कार्यों को करवाया जाएगा। साथ ही शहर के विभिन्न चौक चौराहों और मुख्य मार्गों का भी सौंदर्यीकरण किया जाएगा। इन कार्यों से शहर की सुंदरता बढ़ेगी और लोगों को सहूलियत मिलेगी।

सोनीपत। धायक निखिल मदान व निवर्तमान मेयर राजीव जैन नारियल तोड़कर विकास कार्यों का उद्घाटन करते हुए।

जल भराव की समस्या से मिलेगी निजात

निवर्तमान मेयर राजीव जैन ने बताया कि आज मोहन नगर की विभिन्न गलियों को इंटरलॉकिंग टाइल्स से पक्का करने के कार्य का शुभारंभ किया गया है। इन कार्यों के पूरा होने से लोगों को आवागमन में सुविधा मिलेगी और जल भराव की समस्या से निजात मिलेगी। इसके साथ ही नगर निगम द्वारा शहर के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे विकास कार्यों को भी समय पर पूरा किया जाएगा। इस अवसर पर मनोनीत पार्षद चरण सिंह जोगी, हरि सिंह, राहुल छिक्कारा, परवीन सिसोदिया,राजेश पुनिया, रामकुमार, शैलेंद्र तोमर,अर्पित मिश्रा,अजय चौहान, देवेंद्र झा, सुखबीर जिंदल, राजेंद्र, महेंद्र, कलिराम, कुलदीप वत्स आदि लोग मौजूद रहे।

एमएसएमई–ईएसडीपी के अंतर्गत 42 दिवसीय निःशुल्क प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

- 'गारमेंट कंस्ट्रक्शन के लिए कटिंग एवं टेलरिंग तकनीक' विषय पर आधारित है कार्यक्रम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

गोहाना। प्रतिभागियों के साथ कुलपति प्रो. सुदेश।

भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां के फैशन टेक्नोलॉजी विभाग द्वारा भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय के तत्वावधान में "एंटरप्रेन्योरशिप कम स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम" के अंतर्गत 42 दिवसीय निःशुल्क प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ किया गया। यह कार्यक्रम 14 फरवरी, 2026 से 27 मार्च तक आयोजित होगा। यह प्रशिक्षण "गारमेंट कंस्ट्रक्शन के लिए कटिंग एवं टेलरिंग तकनीक" विषय पर आधारित है। कार्यक्रम का उद्देश्य विशेष रूप से ग्रामीण एवं आसपास के क्षेत्रों की महिलाओं को तकनीकी दक्षता प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर एवं स्वरोजगार के लिए सक्षम बनाना है। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को बेसिक से एडवांस कटिंग तकनीक, सिलाई की उन्नत विधियां गारमेंट निर्माण की बारीकियां तथा व्यावहारिक (हैंड्स-ऑन) प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके साथ ही उद्यमिता विकास, स्वरोजगार के अवसरों एवं लघु उद्योग स्थापना संबंधी मार्गदर्शन भी प्रदान किया जाएगा। कार्यक्रम का शुभारंभ कुलपति प्रो. सुदेश की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। उन्होंने यह भी आश्वस्त किया कि विश्वविद्यालय की ओर से सभी प्रतिभागियों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु हर संभव सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा। विभाग के चेयरमेन डॉ. आशीष हुड्डा ने कहा कि फैशन टेक्नोलॉजी विभाग उद्योग उन्मुख एवं रोजगारपरक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्रतिभागियों को सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। कार्यक्रम की नोडल अधिकारी प्रो. अंशु भारद्वाज ने बताया कि 42 दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान नियमित प्रायोगिक सत्र, विशेषज्ञ व्याख्यान तथा उद्यम स्थापना संबंधी विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा। इस अवसर पर प्रो. विजय नेहरा, डीन एकेडमिक अफेयर, नोडल अधिकारी प्रो. अंशु भारद्वाज विभागाध्यक्ष डॉ. आशीष हुड्डा , संकाय सदस्य एवं अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

बजट सत्र का अवलोकन करने पहुंचे कांग्रेस प्रतिनिधि

गोहाना। गोहाना से कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं के प्रतिनिधिमंडल ने लोकसभा, नई दिल्ली में बजट सत्र की कार्यवाई को प्रत्यक्ष रूप से देखा और सुना। कांग्रेस प्रदेश प्रवक्ता एडवोकेट मनोज गोहाना के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने संसद की कार्यवाही का अवलोकन किया और बजट सत्र की महत्वपूर्ण चर्चाओं को सुना और समझा। एडवोकेट मनोज गोहाना ने कहा कि लोकतंत्र के सर्वोच्च मंच पर चल रही कार्यवाही को निकट से देखने का अनुभव अत्यंत प्रेरणादायक रहा। उन्होंने इसे जनप्रतिनिधियों की जिम्मेदारियों और संसदीय परंपराओं को समझने का महत्वपूर्ण एवं सार्थक अवसर बताया। इस अवसर पर एडवोकेट विनोद मलिक, एडवोकेट राजीव चोपड़ा, कृष्ण दहिया तथा सूबेदार जोरा सिंह भी साथ उपस्थित रहे।

मंडल स्तर पर प्रशिक्षण और प्रवास कार्यक्रमों को लेकर भाजपा की बैठक

- 7 मार्च से 22 अप्रैल तक मंडल स्तर पर प्रवास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जाएगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

गन्नौर। भाजपा मंडल अध्यक्षों की बैठक लेने पहुंचे प्रदेश प्रवक्ता राजकुमार कटारिया का बुका देकर स्वागत करते चेयरमैन निशांत छोक्कर ।

भारतीय जनता पार्टी द्वारा 7 मार्च से 22 अप्रैल तक मंडल स्तर पर प्रवास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जाएगा। इसी कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर शनिवार को स्थानीय मार्केट कमेटी कार्यालय स्थित विश्राम गृह में चारों मंडलों के अध्यक्षों की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में भाजपा प्रदेश प्रवक्ता राजकुमार कटारिया ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की और संगठनात्मक मजबूती को लेकर विस्तृत मार्गदर्शन दिया। बैठक में पहुंचने पर मार्केट कमेटी के चेयरमैन निशांत छोक्कर ने प्रदेश प्रवक्ता राजकुमार कटारिया का बुक्का देकर स्वागत किया। बैठक में मंडल स्तर पर होने वाले प्रवास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की गई। प्रदेश प्रवक्ता राजकुमार कटारिया ने मंडल अध्यक्षों को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा का प्रवास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संगठन को जमीनी स्तर पर और अधिक मजबूत बनाने के उद्देश्य से शुरू किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस दौरान पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ता गांव-गांव, बूथ- बूथ तक पहुंचकर सरकार की नीतियों, जनकल्याणकारी योजनाओं और संगठन के विचारों को आम जनता तक पहुंचाएंगे। इस अवसर पर मार्केट कमेटी के वाइस चेयरमैन योगेश कौशिक,मंडल अध्यक्ष अजय जैन,गौरव कामरा,शकुंतला राठी,संजय गौतम व दीपक नैन व विकास सहित कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

बुढ़ापा पेंशन के नाम पर केवल राजनीति : राव नरेंद्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

हरियाणा की राजनीति में बुढ़ापा पेंशन कटौती और स्थानीय युवाओं को नौकरियों में प्राथमिकता न मिलने का मुद्दा एक बार फिर गरमा गया है। शनिवार को सोनीपत के हनुमान मंदिर के सामने कांग्रेस ने सांकेतिक धरना देकर रोष जताया। प्रदर्शन में कांग्रेस नेताओं व कार्यकर्ताओं के साथ काफी लोग शामिल हुए। प्रदेशाध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह व सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा सहित कई वरिष्ठ नेताओं ने सरकार की नीतियों को जनविरोधी बताया। प्रदेशाध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने कहा कि प्रदेश में बुढ़ापा पेंशन के नाम पर केवल राजनीति की जा रही है। पात्र बुजुर्गों की पेंशन काटकर सरकार ने उनके आत्मसम्मान और अधिकारों पर चोट पहुंचाई है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार योजनाओं का प्रचार तो बड़े स्तर पर करती है, लेकिन धरातल पर लाभार्थियों को परेशान किया जा रहा है।

सोनीपत। सोनीपत में धरना प्रदर्शन के दौरान लोगों को संबोधित करते सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा।

भाजपा ने प्रबंधन सहारे सरकार बनाई : दीपेंद्र

सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि भाजपा ने प्रबंधन और जोड़-तोड़ के सहारे सरकार बनाई है। यह सरकार जनविरोधी साबित हो रही है और किसान, मजदूर तथा बुजुर्गों के हितों की अनदेखी कर रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के आंदोलन से घबराकर मुख्यमंत्री को पेंशन जारी करने के निर्देश देने पड़े हैं, इसलिए फिलहाल सांकेतिक धरना दिया गया है।

पेंशन बहाली की मांग का उठाया मुद्दा

ग्रामीण जिला अध्यक्ष संजीव दहिया ने कहा कि शहर से लेकर गांव तक हर वर्ग परेशान है। धरने के दौरान कार्यकर्ताओं ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और पेंशन बहाली की मांग को जोरदार ढंग से उठाया। इस दौरान पूर्व सांसद धर्मपाल मलिक,पूर्व विधायक पदम सिंह दहिया, पूर्व विधायक जयवीर वाल्मीकि, पूर्व विधायक जगबीर मलिक, पूर्व विधायक सुखबीर फरमाना, मेघा दिवान , प्रेम अत्री, महासचिव राजेश सेवली, जय भगवान आंतिल, सचिव देवेंद्र राठधाना, सचिव पायल मलिक, सचिव अंकित मेहता, लीलू प्रधान बड़ी संख्या में स्थानीय लोग और पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सरकार असली समस्याओं से ध्यान भटका रही : सतपाल

सांसद सतपाल ब्रह्मचारी ने कहा कि सरकार धर्म और भावनात्मक मुद्दों के सहारे जनता का ध्यान असली समस्याओं से भटका रही है, जबकि प्रदेश में बेरोजगारी, महंगाई और किसान संकट गंभीर स्थिति में हैं। विधायक इंदुराज नरवाल ने कहा कि पेंशन कटौती सरकार की संवेदनहीनता का प्रमाण है।

जिम्मेदारियों से मुकरी सरकार : कमल दिवान

शहरी जिला अध्यक्ष कमल दिवान ने भाजपा सरकार पर वादाखिलाफी का आरोप लगाते हुए तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि भाजपा ने लोकसभा और विधानसभा चुनाव के दौरान जनता से लोकलुभावन और बड़े-बड़े वादे किए थे, लेकिन सत्ता में आते ही सरकार अपनी जिम्मेदारियों से मुकर गई है। आज प्रदेश की जनता को परिवार पहचान पत्र जैसी जटिल कागजी औपचारिकताओं और पोर्टल के जाल में उलझाकर प्रताड़ित किया जा रहा है। बुजुर्गों की पेंशन काटे जाने पर कड़ा रोष प्रकट करते हुए कहा कि सरकार की गलत नीतियों के कारण हजारों पात्र बुजुर्ग आज अपने सम्मान (पेंशन) से वंचित हैं। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि बुजुर्गों के हक पर डाका डालना और युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ करना कांग्रेस कतई सहन नहीं करेगी। जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए कांग्रेस सड़क से लेकर संसद तक संघर्ष जारी रखेगी।

शिक्षक समाज की सुरक्षा को करेंगे मजबूत

सोनीपत। जिलेभर के 150 स्कूलों के शिक्षक युवा आपदा प्रशिक्षण शिविर में जुटेंगे। जिला शिक्षा अधिकारी की ओर से इसके लिए आदेश जारी किए गए हैं। भारत स्काउट एंड गाइड की ओर से बिट्स मोहाना में 16 फरवरी से शिविर की शुरुआत होने जा रही है। 22 फरवरी तक चलने वाले शिविर में शिक्षक आपदा की तैयारी, त्वरित प्रतिक्रिया के लिए आवश्यक कौशल अर्जित करेंगे। आपात परिस्थितियों में प्रशासन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करते हुए समाज की सुरक्षा को मजबूत करेंगे। प्रशिक्षण शिविर का उद्देश्य शिक्षकों की आपदा स्थितियों में तैयारी, त्वरित प्रतिक्रिया एवं समन्वय क्षमताओं को सुदृढ़ करना है। उस दौरान आपदा प्रबंधन की बुनियादी अवधारणाओं पर तकनीकी सत्र आयोजित किए जाएंगे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 9253681005, 9253681010

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नही हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10× 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

गलियों में उतारे गए मकानों के रैम्प तुड़वाने की मांग

गोहाना। जिला उपायुक्त के नाम लिखे गए पत्र के साथ ग्रामीण।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

विकास खंड कथूरा के गांव धनाना (शिवनगरी) के ग्रामीणों ने प्रशासन से मकानों के बाहर गलियों में उतारे गए रैम्प तोडन्नवाने की मांग की है। गलियों में रैम्प उतारने से लोगों को आने-जाने में भारी परेशानी हो रही है। ग्रामीण सत्यवान राठी, राजेन्द्र, संदीप राठी, कुलदीप और बिजेन्द्र ने कहा कि गांव में काफी ग्रामीणों द्वारा अपने मकानों के बाहर गलियों में दूर तक कंक्रीट के रैम्प उतार रखे हैं। इस कारण गलियों में आने-जाने का रास्ता बहुत कम रह गया है। लोगों को गलियों से ट्रैक्टर-ट्राली, बुग्गी व अन्य वाहन गुजारने में बड़ी परेशानी हो रही है। जगदीश जाटायन, अशोक, पवन, दलबीर, समुंद्र और सुरेश के अनुसार मकानों के आगे गलियों में रैम्प उतारे जाने को लेकर कई बार लड़ाई-झगड़े भी हो चुके हैं। गांव की गलियां किसी व्यक्ति विशेष की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं अपितु सार्वजनिक होती हैं। ग्रामीणों ने रैम्प तोड़वाने के लिए जिला उपायुक्त को एक पत्र भी लिखा है। इस अवसर पर संतोष, सुमन, नीलम और सुनहरी सहित अन्य ग्रामीण उपस्थित रहे।

प्रदेश सरकार ने काटे सबसे अधिक बीपीएल कार्ड : तायल

- हरियाणा सरकार ने देश में सबसे अधिक 13 लाख 43 हजार 474 कार्ड काटे

गोहाना। हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी व्यापार सैल के पूर्व चेयरमैन मुकेश तायल ने कहा कि सरकार द्वारा परिवार पहचान पत्र के नाम पर लगातार बीपीएल कार्ड और बुजुर्गों की पेंशन काटी जी रही है। कांग्रेस नेता ने दावा किया कि यदि आंकड़ों की बात करें तो पूरे देश में सबसे अधिक बीपीएल कार्ड हरियाणा की भाजपा सरकार द्वारा काटे गए हैं। मुकेश तायल ने कहा कि संसद के शीतकालीन सत्र में विपक्ष द्वारा सत्तापक्ष से बीपीएल कार्ड काटे जाने के बारे में सवाल पूछा था। तब केंद्र सरकार द्वारा जवाब दिया गया था कि पूरे देश में 41 लाख 41 हजार 385 राशन कार्ड काटे गए। इनमें हरियाणा सरकार द्वारा 13 लाख 43 हजार 474 के आंकड़े के साथ देश के सभी राज्यों से अधिक बीपीएल कार्ड काटे गए हैं। पूर्व चेयरमैन मुकेश तायल ने कहा कि बीपीएल कार्ड काटने से गरीब लोगों को राशन की सरकारी दुकान से राशन मिलना बंद हो गया है।

चर्चा | विधायक निखिल मदान ने सेक्टर 14 स्थित अपने कार्यालय में की पत्रकार वार्ता

कांग्रेस का प्रदर्शन सिर्फ लोगों को गुमराह करने का हथकंडा : मदान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

विधायक निखिल मदान ने कहा कि कांग्रेस के पास कोई मुद्दा नहीं है, इसीलिये लोगों को बरगलाने का काम कर रहे हैं। प्रदेश भर में झूठ फैलाने के अलावा कांग्रेस के पास कुछ काम नहीं बचा है, इसी वजह से जगह जगह विरोध प्रदर्शन कर लोगों को गुमराह कर रहे हैं। विधायक ने कहा कि आज आम आदमी जान चुका है कि भाजपा के साथ ही उनका सच्च विकास संभव है। इसी वजह से लगातार भाजपा का कुनबा बड़ा होता जा रहा है।

विधायक निखिल मदान शनिवार को अपने सेक्टर 14 स्थित कार्यालय में पत्रकारवार्ता को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि कांग्रेस जनता को गुमराह करने का प्रयास कर रही है। पेंशन के मुद्दे पर भ्रम फैलाया जा रहा है, जबकि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि किसी भी पात्र व्यक्ति को पेंशन को लेकर परेशानी नहीं होनी चाहिए। जिन लगभग 70 हजार पेंशन मामलों का उल्लेख किया जा रहा है, वे केवल सत्यापन प्रक्रिया के कारण अस्थायी रूप से रुके हैं। सत्यापन पूर्ण होते ही सभी लाभार्थियों को उनकी पेंशन जारी कर दी जाएगी। विधायक मदान ने बताया कि प्रदेश सरकार ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन को 3000 रुपये से बढ़ाकर 3200 रुपये किया है। नवंबर और दिसंबर की बढ़ी हुई राशि का एरियर भी लाभार्थियों के खातों में भेजा गया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सरकार हर वर्ग के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है और विकास की यह गति आगे भी निरंतर जारी रहेगी। इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष सोनीपत अशोक भारद्वाज, भाजपा वरिष्ठ नेता आजाद नेहरा, प्रदेश प्रवक्ता भूपेन्द्र सिंह गहलावत, मार्केट कमेटी वाइस चेयरमैन संजय वर्मा, जिला मीडिया प्रभारी दिनेश अत्री, कुलदीप वत्स आदि मौजूद रहे।

सोनीपत। पत्रकारवार्ता के दौरान उपस्थित विधायक साथ में जिलाध्यक्ष एवं अन्य नेतागण।

आंकड़ों का नहीं, आकांक्षाओं का रोडमैप है बजट : मदान

इस दौरान विधायक ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रस्तुत केंद्रीय बजट देश को वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने की दिशा में एक मजबूत, दूरदर्शी और निर्णायक कदम है। यह बजट केवल आंकड़ों का दस्तावेज नहीं, बल्कि 140 करोड़ देशवासियों की आकांक्षाओं का रोडमैप है। बजट के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने यह सुनिश्चित किया है कि विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। विधायक मदान ने बजट को किसान हितैषी बताते हुए कहा कि इस बजट में केन्द्र सरकार ने अन्नदाता के सम्मान और समृद्धि को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2013-14 में किसानों के लिए लगभग 27 हजार 662 करोड़ रुपये का प्रावधान था, जिसे बढ़ाकर वर्ष 2026-27 में 1 लाख 40 हजार 529 करोड़ रुपये कर दिया गया है। विधायक ने बताया कि कि केन्द्रीय बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर विकास को विशेष प्राथमिकता दी गई है। बजट में मध्यम वर्ग को राहत देने और गरीब कल्याण योजनाओं को सुदृढ़ करने के लिए भी कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। केंद्र सरकार ने पहले भी हरियाणा को अनेक महत्वपूर्ण परियोजनाएं दी हैं और वर्तमान बजट में भी प्रदेश के लिए व्यापक प्रावधान किए गए हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश निरंतर विकास की दिशा में आगे बढ़ रहा है। अंत में उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह बजट देश को आर्थिक रूप से सशक्त, आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। वहीं उन्होंने आगामी बजट सत्र को प्रदेश और विशेष रूप से सोनीपत के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि पिछले वर्ष रखी गई अनेक मांगों को सरकार ने स्वीकृति दी है।

तेज रफ्तार से थका मन
चाहे सुकून भरी स्लो लाइफ

पिछली एक सदी में तकनीकी विकास में क्रांति के साथ ही लोगों की जीवनशैली भी बहुत तेज रफ्तार वाली हो गई थी। लेकिन कोविड के बाद से लोगों की सोच बदलने लगी और जल्दी से सब कुछ पा लेने के बजाय जीवन में सुकून को तरजीह देने लगे हैं। यही वजह है कि पूरी दुनिया में अब लोग तेज रफ्तार से ऊबकर स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं।

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

एक समय तक 'तेज रफ्तार' होना, रोमांच का सबब माना जाता था, कामयाबी की निशानी थी। इसलिए अधिकांश लोग तेज-तेज और तेज की तरफ पिछली लगभग एक सदी से दौड़ते रहे हैं। इस भागम-भाग में वाकई इंसान ने अपनी जिंदगी की रफ्तार बहुत तेज कर ली। फास्ट इंटरनेट, बुलेट ट्रेन, आवाज की गति से उड़ते हवाई जहाज, इंस्टेंट अपडेट और कुछ महीने या साल में ही करियर की बुलंदी छूना, ये सब इसी तेज रफ्तार के उदाहरण हैं। लेकिन बीते कुछ समय से अब अधिकतर इंसान इस तेज रफ्तार जिंदगी को रोमांच की बजाय आफत का सबब मानने लगे हैं। यही कारण है कि अब दुनिया, तेज रफ्तारी से रोमांचित नहीं है बल्कि स्लो लाइफ की तरकीबें खोज रही है। अमेरिका से लेकर अफ्रीका तक आज स्लो लाइफ न्यू लाइफस्टाइल बन रही है, क्योंकि लोग मशीन बनने से थक चुके हैं, अब वे थोड़ा ठहरकर जीना चाहते हैं।

क्यों लौट रहे हैं धीमे की ओर: पूरी दुनिया में लोग स्लो लाइफ की तरफ लौट रहे हैं, तो इसकी वजह है कि पिछले कई दशकों के भागम-भाग के कारण परिवार की संरचना कमजोर होती जा रही है। फोन आपको किसी क्षण बेफिक्र नहीं होने देता, फुर्सत में नहीं रहने देता। नए-नए रेडीमेड पकवानों की कुछ मिनटों में सप्लाई ऐसे होने लगी है कि लोग अपने स्वाद का स्थाई सुख ही भूल गए हैं। नींद अब दुनिया की सबसे बड़ी नियामत बन चुकी है और सबसे बड़ी बात यह है कि इंसान खुद को ही भूलने लगा है। यही वजह है कि अब अमेरिका हो या एशिया, अफ्रीका और यूरोपीय देश के लोग परिवार के साथ समय बिताना चाहते हैं। कुछ घंटे या हफ्ते में एक दिन कम से कम बिना फोन के रहना चाहते हैं। कभी आराम से धीरे-धीरे पकाकर अपनी मनपसंद डिश खाना चाहते हैं और चाहते हैं कि कम से कम हफ्ते का एक दिन तो ऐसा हो, जब सोकर जगने का टाइमर सेट न हो। इस सबके बीच लोग अब अपने साथ भी कुछ घंटे, कुछ दिन बिताना चाहते हैं, इसलिए लोग तेज रफ्तार को छोड़कर धीमी और सुकून भरी जिंदगी की तरफ लौटना चाहते हैं।

स्लो लाइफ का सही मतलब: भले ही एक दौर में धीमी रफ्तार, आलस्य का पर्याय मानी जाती रही हो, लेकिन आज जब फास्ट लाइफ को विश्व स्वास्थ्य संगठन बर्नआउट और डिप्रेशन का सबसे बड़ा कारण बता रहा है, तब पूरी दुनिया में स्लो लाइफ या धीमे जीवन की ओर बढ़ने को आलस्य की निशानी नहीं बल्कि नई चेतना का पर्याय माना जा रहा है। वास्तव में स्लो लाइफ का मतलब काम को अधूरा छोड़ देना नहीं है। जीवनशैली से समझौता नहीं है और न ही स्लो लाइफ का मतलब घर में पड़े रहना है बल्कि स्लो लाइफ का मतलब है कम लेकिन अर्थपूर्ण काम करना। स्लो लाइफ का मतलब है डिजिटल डिवाइसेस से घिरे न रहना। बीच-बीच में पूरी तरह से डिजिटल डिटॉक्स होना। स्लो लाइफ का मतलब है स्थानीय जीवन का आनंद लेना और पारिवारिक जीवनशैली का लुत्फ उठाना। स्लो लाइफ का मतलब है, अपने पीढ़ियों पुराने व्यंजनों का आनंद लेना और प्रकृति से भरपूर जुड़ाव रखना। स्लो लाइफ का मतलब है रिश्तों की गुणवत्ता बढ़ाना, न कि उनकी संख्या बढ़ाना। और स्लो लाइफ का एक अंतिम मतलब है हर पल उपलब्ध होने की मजबूरी से मुक्त होना।

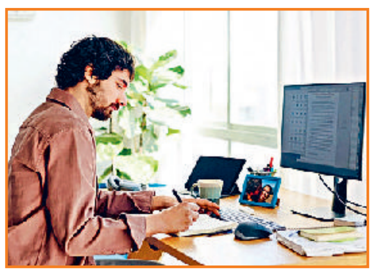

दुनिया इसलिए थकी रफ्तार से: द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से लगातार दुनिया तेज रफ्तार जीवनशैली को कामयाबी और स्टेटस सिंबल की तरह पेश करती रही है, तो सवाल है फिर आखिर 21वीं सदी के दो दशक बाद आकर दुनिया का तेज रफ्तारी से मोहभंग क्यों हो गया? इसके पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं। कोविड के बाद लोगों को जिंदगी की असलियत का एहसास हो गया है कि चाहे जितनी बड़ी कामयाबी हो, चाहे जितनी सुख-सुविधाएं हों और चाहे जितनी संपन्नता हो, लेकिन अगर प्रकृति खफा हो गई, तो जिंदगी की कोई कीमत नहीं रहती। पल भर में सारी कामयाबी, सारी तेज रफ्तारी धरी की धरी रह जाती है। कोविड ने एहसास कराया कि जीवन अस्थायी है। लोग पहली बार जीवन के अस्थायीपन और नश्वरता से दो-चार हुए। यही वह समय था, जब बिना दफ्तर गए भी नौकरी कर सकने का विकल्प हासिल हुआ। जी हां, वर्क फ्रॉम होम ने लोगों को बताया कि अगर दफ्तर न जाना पड़े तो भले एक घंटे ज्यादा भी काम करना पड़े, लेकिन दफ्तर के रास्ते के जोखिम, तनाव और अनुपयोगी समय से बच सकते हैं। कोविड ने लोगों को डिजिटली ओवरलोड कर दिया। लगातार मीटिंग्स, सोशल मीडिया की इंगेजमेंट और नोटिफिकेशंस का सिरदर्द लगातार पेशंस की परीक्षाएं लेती रही और अंततः लोग इस तेज रफ्तार से आजीज आ गए।

शहरों से गांव की तरफ वापसी: पूरी 20वीं सदी में और 21वीं सदी के पहले लगभग दो दशकों तक पलायन का मतलब गांव से शहर की ओर जाना ही होता रहा है। लेकिन कोविड के बाद यूरोप में 16 प्रतिशत और अमेरिका में 6 प्रतिशत लोग शहर छोड़कर गांवों में बस गए। भारत में भी उच्च आयवर्ग के 2 प्रतिशत लोग न सिर्फ बड़े शहरों को छोड़कर अपनी जड़ों की ओर रहने के लिए, लौटे बल्कि जो पारंपरिक रूप से अपने गांवों या पैतृक स्थानों में नहीं गए, वे भी तेज रफ्तार महानगरों को छोड़कर स्लो मोशन की जिंदगी वाले जंगलों, पहाड़ों के बीच में गांव या गांवनुमा कस्बों की ओर रुख कर गए। मेट्रो शहरों में डेढ़ से दो फीसदी लोग छोटे शहरों या कस्बों की तरफ लौटे। हालांकि भारत में शहरों से गांव की ओर वापसी का आंकड़ा लगभग न के बराबर रहा, क्योंकि भारत के गांव सामान्य सुख-सुविधा वाली जिंदगी के अनुकूल नहीं हैं। इसलिए भारत में बड़े लोग या तो पहाड़ों में बसे छोटे शहरों या कम औद्योगिक और धुर खेतिहर इलाकों के कस्बों की तरफ लौटे। कोविड के बाद ही लोगों ने अपनी छतों पर बागवानी का रोमांच महसूस करना शुरू किया। स्थानीय बाजारों की वापसी हुई, पारंपरिक जीवनशैली में योग और ध्यान की हिस्सेदारी बढ़ी और मानसिक स्वास्थ्य को भी महत्वपूर्ण माना जाने लगा। इससे लोगों ने नींद का सुख महसूस किया, खुद उगाकर सब्जियां खाईं तो स्वाद के साथ आत्मसंतोष महसूस किया, रिश्तों में स्थायित्व और हार्मोनल हेल्थ में बेहतरी का एहसास किया। इसलिए स्लो लाइफ की रेटिंग जो हमेशा फास्ट लाइफ से नीचे रहती थी, पहली बार उससे ऊपर हुई।

कुछ भ्रम भी टूटे: दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से ही पूरी दुनिया में यह मान लिया गया था कि स्लो लाइफ का मतलब है- धीमा उत्पादन, धीमा पूंजी निर्माण, मतलब गरीबी और बदहाली। लेकिन कोविड के दौरान और उसके बाद स्लो लाइफ का मतलब यह नहीं रहा। लोगों की सोच में बदलाव आया। कोविड के बाद की स्लो लाइफ ने दुनिया को दिखाया कि धीमे होने का मतलब नाकारा होना नहीं है। धीमे होने का मतलब अर्थव्यवस्था का नुकसान नहीं है और न ही धीमे होने का मतलब उत्पादनहीनता है। स्लो जीवनशैली ने ज्यादा संतुष्टि दी और बेचैन उपभोगवाद पर लगाम लगाया। सबसे बड़ी दौलत रिश्तों में आई गर्मजोशी से मिली। लब्बोलुआब यह कि लोगों को, मजबूरी और उदासीनता में शुरू की गई स्लो लाइफ रास आ गई और अब धीरे-धीरे इससे मोहब्बत बढ़ती ही जा रही है। *

स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ने के तरीके

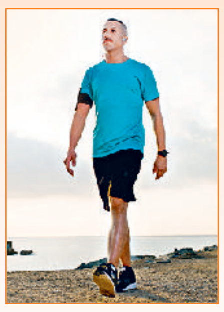

- हर दिन 30 मिनट किसी भी तरह की स्क्रीन से दूर रहें। चाहे टीवी की स्क्रीन हो, मोबाइल की या लैपटॉप की। इस दौरान फोन से नहीं, आस-पास की दुनिया से जुड़ें।
- सप्ताह में कम से कम एक दिन ऐसा रखें, जिसकी पहले से कोई प्लानिंग न हो। एक तरह से इस दिन को कुछ न करने की मस्ती का दिन बनाएं यानी कोई प्लान न ले।
- पैदल चलना सीखें। एक जमाने में आम आदमी हर दिन कम से कम 5-7 किलोमीटर पैदल चलता था। अब कई लोग ऐसे हैं, जो घर से बाहर सौ मीटर भी हर दिन पैदल नहीं चलते। अगर स्लो लाइफ का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो फिर से पैदल चलने की तरफ लौटें। पैदल चलने से मन भी प्रसन्न रहता है और तन भी स्वस्थ रहता है।
- काम की सीमाएं तय करें। दिन में निश्चित घंटों तक ही काम करें और हर दिन के काम की एक मात्रा तय कर लें। यह नहीं कि जब तक जग रहे हैं, काम करते रहें।
- धीमी जिंदगी का रोमांच महसूस करने के लिए दुनिया से भले कम जुड़ें, पर अपने आपसे दोस्ती जरूर करें। खुद से दोस्ती करना भी एक अव्यक्त सुख की स्थिति में रहना है।

ह्यूमन नेचर
शैलेंद्र सिंह

आमतौर पर माना जाता है कि इंट्रोवर्ट स्वभाव के लोगों में आत्मविश्वास और योग्यता की कमी होती है। जबकि यह केवल अलग तरह की एक पर्सनालिटी होती है। इस पर्सनालिटी के कुछ फायदे हैं तो वहीं कुछ नुकसान भी हैं।

न तो वीकनेस-न ही बीमारी
अलग होती है इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी

आधुनिक मुखर और सोशल मीडिया प्रधान समाज में अंतर्मुखी यानी इंट्रोवर्ट होना अकसर गलतफहमियों का विषय बन जाता है। जबकि अनेक वैज्ञानिक शोध यह साबित करते हैं कि अंतर्मुखी होना न तो किसी तरह की कोई कमजोरी है और न ही बीमारी। हांस आइजेंक के व्यक्तित्व सिद्धांत के मुताबिक अंतर्मुखी और बहिर्मुखी होना व्यक्तियों में मस्तिष्क की उत्तेजना के अलग-अलग स्तरों का होना है। अंतर्मुखी लोगों का बेसलाइन पहले से अधिक होता है, इसलिए वे शोर, भीड़ और अत्यधिक सामाजिक उत्तेजना से जल्द थक जाते हैं। इसलिए वह बहिर्मुखी लोगों के विपरीत ऐसी तमाम स्थितियों में शांत और खुद तक सीमित रहते हैं। यह उनकी मात्र जैविक वास्तविकता होती है।

मुखर दौर में शांत लोग: आज के तेज आवाजों या शोरगुल से भरे दौर में कई बार अंतर्मुखी लोग खुद को हाशिए पर महसूस करने लगते हैं। लेकिन अगर अंतरराष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक शोधों की नजर से देखें तो अंतर्मुखी लोगों का यह हाशियाकरण उनकी अक्षमता नहीं बल्कि समाज की अपेक्षाओं का नतीजा है। इसलिए जेरोम कगन और हांस आइजेंक जैसे वैज्ञानिकों ने अपने शोध के जरिए साबित किया था कि अंतर्मुखी होना कोई ऐसा व्यवहार नहीं होता, जिसे लोग सीखें या उनमें वह परवरिश के कारण आए। इनके मुताबिक वास्तव में अंतर्मुखी होना एक किस्म की जैविक संरचना से जुड़ा तथ्य है, क्योंकि अंतर्मुखी लोगों का नर्वस सिस्टम दूसरे सामान्य लोगों के मुकाबले कहीं अधिक संवेदनशील होता है। लेकिन आधुनिक दौर में एक्सट्रोवर्ट यानी बहिर्मुखी लोगों को ही आदर्श मान लिया जाता है। इसके विपरीत इंट्रोवर्ट लोगों को महत्व और मान्यता नहीं दी जाती, जो महत्व और मान्यता बहिर्मुखी लोगों के खाते में आती है और इसकी शुरूआत बचपन से ही पहले घर में और फिर स्कूल में हो जाती है। वहां शांत रहने वाले बच्चों को उपेक्षित किया जाता है, भले ही वह कितना भी योग्य क्यों न हो। इसके बाद कॉर्पोरेट दफ्तरों में भी लीडर वही माना जाता है, जो ज्यादा बोलता हो और किसी भी तरह के मामले में त्वरित प्रतिक्रिया करता हो। जबकि कई बार संकट के समय अंतर्मुखी लोग ज्यादा बेहतर निर्णय लेते हैं। खासकर अगर वैज्ञानिकों, लेखकों आदि से जुड़ा कार्य हो। अडम ग्रांट ने अपने शोध से साबित किया कि प्रो-एक्टिव टीमों में अकसर ऐसे लीडर ज्यादा सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के फायदे: इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी होने के कई फायदे होते हैं। जैसे-अंतर्मुखी लोगों में गहन सोच और निर्णय क्षमता होती है। ये किसी भी विषय पर अकसर जानकारियों को बहुत गहराई तक प्रोसेस करते हैं और जल्दी में निर्णय लेने से बचते हैं। इसलिए उनके निर्णय अधिकतर सफल, सुरक्षित और सुलझे हुए होते हैं। यही कारण है कि रचनात्मक और जटिल कामों में उनकी गुणवत्ता उच्च स्तर की होती है। ऐसे लोगों में सुनने और सहानुभूति की क्षमता बहिर्मुखी लोगों से ज्यादा होती है। अंतर्मुखी लोग बेहतर श्रोता होते हैं, जिससे रिश्तों में विश्वास और गहराई बनती है। टीम लीडरशिप में यह गुण सहकर्मियों के हुनर को बाहर निकालने में मदद करता है। अंतर्मुखी लोगों में अकेले में लंबे समय तक काम करने की क्षमता और फोकस में बने रहने की प्रवृत्ति होती है। इस कारण ऐसे लोग अनुसंधान, लेखन, डिजाइन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में काफी सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के नुकसान: इस स्वाभाव के कारण इन लोगों में कुछ खामियां भी देखी जाती हैं। मसलन- अकसर ऐसे लोग वर्बल नेटवर्किंग, पब्लिक फेसिंग जॉब्स, सेल्स या राजनीतिक भूमिकाओं में फिट नहीं बैठते। ऐसी जगहों में अव्वल तो ये आते ही नहीं और आते हैं तो सफल नहीं होते हैं। दुनिया में कई काम और कई गतिविधियां ऐसी होती हैं, जो खुले रूप से बातचीत और आत्मप्रचार को तरजीह देती हैं। इस मामले में ये कमजोर पड़ते हैं। कई अध्ययनों में यह सामने आया है कि ऐसे लोगों में

अवसाद या अकेलेपन से घिरने का जोखिम बना रहता है। लेकिन यह सभी अंतर्मुखी लोगों के लिए सच नहीं होता। आज के मुखर युग में शांत या गंभीर रहना अकसर आत्मविश्वास की कमी समझ लिया जाता है। इसलिए आज के दौर में ऐसे लोग कई बार प्रमोशन पाने, मान्यता हासिल करने और सार्वजनिक मंचों पर अपनी कामयाब उपस्थिति बनाने में नाकाम रहते हैं। *

वासंती दोहे
घमंडीलाल अग्रवाल

टेसू की सरगम छिड़ी

धरती ने सज-धज किया, दुलहन-सा शृंगार।
पीत-वसन से झांकता, मानो पहला प्यार।।
जगा रही है कोकिला, मन में मीठी हूक।
गोरी पी की बाट में, बैठी बन कर मूक।।
भ्रमर सभी हैं पी रहे, फूलों का मकरंद।
पंचम सुर में गूंजते, खुशियों वाले छंद।।
धीमे-धीमे नशे में, पवन चले है खूब।
प्राणी-प्राणी जा रहा, अजब नशे में डूब।।
उर में जागी आग-सी, अंग-अंग उन्माद।
संग उन्हें भी आज लाए जा री सौतन याद।।
कण-कण से गायब हुआ, सर्दी का आतंक।
मुस्कानों ने पा लिए, सबसे ज्यादा अंक।।
धूप कुनमुनी डोलती, गरमाया परिवेश।।
मधुर गंध का बांटता, हर उपवन संदेश।।
सरसों रानी पर चढ़ा, यों यौवन का रंग।
ठुमक-ठुमक कर बोलती, चली पिया के संग।।
बैरागी मन पूछता, किसका है यह खेल।
मौसम का जादू चला, फली प्रीति की बेल।।
टेसू की सरगम छिड़ी, महुआ के हैं ठाठ।
जरा देखिए खुल गई, फगुनाहट की हाट।।

व्यंग्य / अजय अनुरागी

अफसर की टांग

सुना था कानून के हाथ बहुत लंबे होते हैं, लेकिन देखा यह भी गया है कि कुछ अफसरों की टांग भी बहुत लंबी होती है। ऐसे ही एक अफसर की टांग दूर तक पसरी रहती थी। वह बैठता इस कक्ष में था, और टांग उस कक्ष तक फैलाए रखता था। कार्यालय के जिस कक्ष में जाओ वहीं अफसर की टांग घूमती नजर आती थी। अफसर जहां नहीं पहुंच पाता था, वहां भी उसकी टांग पहुंच जाती थी। कई बार अफसर से पहले उसकी टांग उपस्थित रहा करती थी। लोग अफसर से कम उसकी टांग से ज्यादा परेशान रहा करते थे। अब अफसर की टांगों में घंटी कौन बांधे भला!

टांग अफसर से भी ज्यादा चालाक थी। किसी को पास फटकने नहीं देती थी। अफसर की अनुपस्थिति में अफसर की टांग शासन किया करती थी। लोग चाहते थे कि अफसर टांग को थोड़ा लूज करें, तो चैन की सांस आ सके। हालांकि अफसर छोटा-मोटा था, लेकिन उसकी टांग बहुत बड़ी थी। उसकी टांग भरोसे लायक तो थी ही नहीं, फिर भी उस पर भरोसा करना पड़ता था। वह चालाक था और दूसरों की टांग को अपने हित में इस्तेमाल करना जानता था। इसलिए लोग अफसर की टांगों से अपनी टांगें बचाते फिरते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि अफसर उनकी टांगों को अपनी टांगों में ना बदल डाले। अफसर टांग का बहुत कच्चा था, इसलिए अपनी टांग को हर जगह टांग कर ले जाता था। टांग के बिना कहीं जाता भी नहीं था। टांग ने इतना प्रभाव जमा लिया था कि अफसर प्रभावहीन होने लगा था। अफसर की दोनों टांगों की दो अलग-अलग परंपराएं थीं। मगर अफसर दोनों को साध लेता था। अकसर लोग अफसर की पहली टांग के भरोसे दूसरी टांग से धोखा खा बैठते थे।

अफसर की टांगों को लेकर लोगों में बड़ा कंफ्यूजन था। पता नहीं पड़ता था कि पहली कौन सी है और दूसरी कौन सी है? लोग जिसे पहली समझते थे, वह दूसरी निकलती थी। जिसे दूसरी समझते थे, वहां टांग होती ही नहीं थी। चालाक अफसर हर मुद्दे पर एक टांग को फंसा कर रखता था तथा दूसरी टांग को बचाकर रखता था। टांग विहीन अफसर नख-दंत विहीन शेर की तरह होता है, जो गुर्रा तो सकता है मगर दबोच नहीं सकता। वह अफसर ही क्या जिसके पास टांग न हो! वह टांग ही क्या जो अड़ना न जाने। अफसर की टांगों की करामात यह थी, कि पहली उठ जाती थी तो दूसरी बैठी रहती थी, और दूसरी उठ जाती थी तो पहली लेट जाती थी। अफसर चाहता था एक साथ, एक टांग, दो काम करती रहे, ताकि टांग की स्ट्रेटेजी कोई पकड़ ना पाए। टांग से परेशान लोग, टांग को उखाड़ फेंकने के लिए, एकजुट हुए। अंत में हुआ यह कि अफसर उखड़ गया, मगर उसकी टांगें नहीं उखड़ पाईं। *

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

शक

शाम को ऑफिस से घर लौटते ही पति हरीश से उपासना ने कहा, 'देखिए, रोज शाम को पता नहीं पिताजी कहां जाते हैं और देर तक लौटते हैं।' 'कहां जाएंगे पार्क के अलावा। वहां इनके हम उम्र लोग मिलते होंगे। बस उनके साथ ही गपशप करते होंगे।' हरीश ने जवाब दिया।

'नहीं मुझे ऐसा नहीं लगता पिताजी कहीं और ही जाते हैं और मुझसे रोज अलग-अलग तरह का नाश्ता बनवाते हैं।' उपासना ने बताया। 'तुम भी बेवजह पिताजी पर शक कर रही हो। जो उनकी इच्छा है उन्हें करने दो। मां के चले जाने के बाद उनकी इच्छाओं का ख्याल हम नहीं रखेंगे तो भला कौन रखेगा?' हरीश ने समझाया। उसी समय पिताजी कमरे के अंदर आए और बोले, 'बहू आज गर्मा-गर्म समोसे बनाकर पैक कर दो, मुझे जाना है।' 'जी पिताजी।' उपासना ने धीरे से कहा। समोसे लेकर जैसे ही पिताजी घर से निकले, उपासना भी छुपते हुए उनके पीछे-पीछे चल दी। एक-डेढ़ किलोमीटर चलने के बाद पिताजी एक वृद्धाश्रम के भीतर चले गए। 'अच्छा तो यह बात है। अपने किसी यार-दोस्त को खिलाने लाते हैं पकवान।' उपासना मन ही मन बुदबुदाई। फिर दावाजे की ओट लेकर खड़ी हो गई। पिताजी किसी के साथ बैठकर समोसे खाते हुए ठहाके लगाने लगे। 'अरे, यह आवाज तो बहुत जानी-पहचानी लग रही है। कौन हैं वो, जिसके लिए पिताजी रोज नाश्ता बनवाकर लाते हैं?' मन ही मन बुदबुदाते हुए उपासना ने कमरे के भीतर झांका। 'अरे यह क्या!' वह अवाक रह गई। उसके पैरों तले की जमीन खिसक गई। 'मेरे बाबूजी वृद्धाश्रम में!' खुद से कहकर वह रोने लगी। दरअसल, उपासना के बाबूजी पिछले एक महीने से वृद्धाश्रम में रह रहे थे, जिसकी खबर केवल हरीश के पिताजी को ही थी। इसलिए वे रोज उपासना और हरीश से बताए बिना अपने समधी से मिलने यहां आया करते थे। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

स्त्री के आंतरिक द्वंद्व की कहानियां

यह सही है कि बदलते समय के साथ परिवार और घर से बाहर भी स्त्री की भूमिका में बड़ा बदलाव आया है। मगर कमोबेश उसकी पीड़ा, घुटन और त्रासदियां अब तक नहीं बदलीं। हां, उसके रूप जरूर बदले हैं। वरिष्ठ लेखिका कल्पना मनोरमा ने अपने कहानी संग्रह 'एक दिन का सफर' में स्त्री के इसी बहुआयामी द्वंद्व को बड़ी बारीकी और मार्मिकता से उकेरा है। इन कहानियों में उन्होंने बेशुमार दबावों, तनावों से आहत स्त्री की पीड़ा को स्वर दिया है। संग्रह की कहानियां सशक्त होने के साथ ही समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक भी हैं। इसमें आज के दौर की महिलाओं के संघर्ष को भी देखा जा सकता है।

इस संग्रह की पहली कहानी 'कितनी कैदें' के किरदार की घुटन, जैसे आत्मा को निर्ममता से छील कर लहूलुहान कर देती है। मर्यादा, इज्जत के नाम पर किस तरह बेटियां बिना अपराध के बलि पर चढ़ा दी जाती हैं, इस कटु सत्य को कहानी बड़े मार्मिक तरीके से बयां करती है। शीर्षक कहानी 'एक दिन का सफर' में नायिका के भीतर का द्वंद्व उसका अपना नहीं है। यह स्त्री का सामूहिक द्वंद्व है। वही द्वंद्व, जिसका सामना उसे बाहर-भीतर हर कहीं करना होता है। 'आखिरी सिगरेट' दांपत्य जीवन में प्रेम की लालसा में घुटती एक स्त्री मन की कहानी है तो 'गुनिता की गुड़िया' कैद से बाहर निकलने की एक स्त्री की छटपटाहट को बयां करती है। 'दुख का बोनसाई' मायके से लड़की के अटूट रिश्ते की कहानी है। ये कहानियां ऐसी हैं, जिनसे सहज ही हर स्त्री जुड़ाव महसूस करेगी। सटीक-जीवंत रूपकों के प्रयोग से भाषा जीवंत हो उठी है। कहानियों की भाषा ही नहीं कहन का शिल्प भी बेहतरीन है। *

पुस्तक: एक दिन का सफर, **लेखिका:** कल्पना मनोरमा, **मूल्य:** 195 रुपए, **प्रकाशक:** अनन्य प्रकाशन, दिल्ली

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम

अन्नामलाईयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै

धार्मिक स्थल

शिखर चंद जैन

आज पूरे देश में महाशिवरात्रि का पावन पर्व मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश भर के शिव-शक्ति मंदिरों में भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है। इस मौके पर हम आपको दक्षिण भारत में स्थित कुछ प्राचीन, भव्य और प्रसिद्ध शिव मंदिरों की विशेषताओं के बारे में बता रहे हैं। साथ ही गुजरात में स्थित अनोखे स्तंभेश्वर महादेव मंदिर के बारे में भी बता रहे हैं।

महादेव शिव-पार्वती को समर्पित भव्य-अनोखे-प्रसिद्ध मंदिर

जिस तरह उत्तर भारत में स्थित महाकालेश्वर, काशी विश्वनाथ, नागेश्वर महादेव, वैद्यनाथ आदि शिव मंदिरों के प्रति श्रद्धालुओं में असीम श्रद्धा है। उसी तरह दक्षिण भारत में भी कई अनोखे और भव्य मंदिर स्थित हैं। प्राचीन भारत में चोल, पल्लव और चालुक्य जैसे कई राजवंशों ने लंबे समय तक दक्षिण भारत पर शासन किया। अपने शासनकाल में उन राजाओं ने देवों के देव महादेव भगवान शिव के अत्यंत भव्य मंदिरों का निर्माण कराया। इन मंदिरों की अनोखी वास्तुकला दुनिया भर के पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करती है। इनमें से कुछ मंदिर देश में स्थित बारह ज्योतिर्लिंगों में भी सम्मिलित हैं। ये प्राचीन मंदिर श्रद्धालुओं और शिव भक्तों की आस्था के प्रमुख केंद्र हैं।

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम आंध्र प्रदेश: यह शिव मंदिर आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम नामक छोटे से शहर में कृष्णा नदी के किनारे स्थित है। सातवाहन शासनकाल के इतिहास के अनुसार इस मंदिर का निर्माण काल द्वितीय शताब्दी के आस-पास माना जाता है। बाद में विजय नगर साम्राज्य के राजाओं और छत्रपति शिवाजी महाराज ने इस मंदिर में मंडप सहित कई संरचनाओं का निर्माण करवाया। यह मंदिर नल्लामलाई पहाड़ियों पर स्थित है, जो मंदिर को एक सुंदर पृष्ठभूमि प्रदान करता है। दक्षिण भारत में स्थित मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस मंदिर की एक और विशेषता यह भी है कि यह देवी सती के 52 शक्ति पीठों में से एक है। यहां भगवान शिव की मल्लिकार्जुन अवतार में और माता पार्वती की भ्रामरंबा रूप में पूजा की जाती है। यहां महाशिवरात्रि, उगादि, कार्तिकाई, श्रवणमहोत्सवम धूमधाम से मनाते हैं।

तट मंदिर, महाबलीपुरम

तट मंदिर, महाबलीपुरम तमिलनाडु: तट मंदिर दक्षिण भारत के सबसे पुराने संरचनात्मक मंदिरों में से एक है। यह परिसर बंगाल की खाड़ी के तट पर तमिलनाडु के महाबलीपुरम में समुद्र के किनारे स्थित है। इसे अपनी द्रविड़ वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण पल्लव वंश के राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह) द्वारा ग्रेनाइट पत्थरों से कराया गया। इसके परिसर में तीन मंदिर हैं, जिनमें से दो भगवान शिव को और एक भगवान विष्णु को समर्पित है। मुख्य मंदिर पूर्व दिशा की ओर इस तरह से निर्मित है, जिससे सूर्योदय की किरणें शिवलिंग तक पहुंच सकें। सन् 1984 में इस मंदिर को महाबलीपुरम में स्मारकों के समूह के हिस्से के रूप में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

अन्नामलैयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई तमिलनाडु: तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई शहर में स्थित अन्नामलैयार मंदिर बहुत प्रसिद्ध शिव मंदिर है। अरुणाचल पहाड़ियों की तलहटी में स्थित होने के कारण इसे अरुणाचलेश्वर मंदिर भी कहा जाता है। यह पंचभूत स्थलों में से एक है, जहां भगवान शिव अग्नि तत्व के रूप में विराजमान हैं। शिवलिंग को अग्निलिंग भी कहा जाता है और यहां भगवान शिव की पूजा अरुणाचलेश्वर के रूप में की जाती है। अन्नामलैयार मंदिर परिसर भारत के सबसे विशाल मंदिर परिसरों में से एक है। इस मंदिर का 11 मंजिला गोपुरम भारत के सबसे ऊंचे मंदिर गोपुरमों में से एक है, जिसकी ऊंचाई 66 मीटर है। इस मंदिर के मुख्य देवता अरुणाचलेश्वर और अन्नामलाई अम्मन हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित यह मंदिर अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला के लिए जाना जाता है।

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै तमिलनाडु: मंदिर नगरी के नाम से विख्यात मदुरै के सबसे भव्य मंदिरों में से एक अरुलमिगु मीनाक्षी अम्मन् मंदिर है, जिसे मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर भी कहा जाता है। इस मंदिर की मुख्य देवी मीनाक्षी देवी हैं, जिन्हें देवी पार्वती का दिव्य अवतार माना जाता है। भगवान शिव की पूजा भगवान सुंदरेश्वरार के रूप में की जाती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह वह स्थान है, जहां सुंदरेश्वरार ने देवी मीनाक्षी से विवाह किया था। सन 1190 से 1205 ईसवी तक शासन करने वाले पांड्य राजा सदावर्मन कुलशेखरन प्रथम ने मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर अपने गोपुरमों (मंदिर के शिखर), विशाल हॉल, मूर्तियों, नक्काशी और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। यह दक्षिण भारत के भव्य मंदिरों में से एक है। *

स्तंभेश्वर महादेव, वड़ोदरा गुजरात

दक्षिण भारत से दूर पश्चिमी राज्य गुजरात में भी एक प्रसिद्ध-विशिष्ट मंदिर स्तंभेश्वर महादेव स्थित है। इसमें एक ऐसा अनोखा शिवलिंग है, जिसका जलाभिषेक स्वयं समुद्र अपने जल से प्रतिदिन दो बार करता है। यह मंदिर अरब सागर में स्थित है और दिन में दो बार समुद्र में डूब कर अदृश्य हो जाता है। समुद्र का खारा जल इस शिवलिंग को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता। यह मंदिर गुजरात के भरूच शहर से लगभग 35 किलोमीटर दूर सागर विस्तार के निकट जंबुसबुरता लुकालुका के नजदीक कावि, कंबोई गांव में स्थित है। इस मंदिर में स्वयंभू शिवलिंग की ऊंचाई 4 फीट और व्यास 2 फीट है। इस शिवलिंग के चारों ओर तट पर मंदिर का निर्माण सातवीं सदी के आस-पास हुआ था। माना जाता है कि चावड़ी के संतों द्वारा इसका निर्माण करवाया गया था। बाद में इस मंदिर का पुनर्निमाण आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा भी करवाया गया था। शिव महापुराण, स्कंद पुराण जैसे पौराणिक ग्रंथों में भी इस मंदिर के शिवलिंग का उल्लेख मिलता है।

मंदिर के दर्शन तभी संभव हैं, जब समुद्र में ज्वार कम हो और समुद्र का पानी तट से उतरने लगे। इस मंदिर के ओझल होने का कारण समुद्र में उठा ज्वार होता है। ज्वार के कारण पानी के उद्वेग के समय शिवलिंग पूरी तरह से जलमग्न हो जाता है। मंदिर भी सागर की गहरी लहरों में समा जाता है। तब तट से भी मंदिर दिखना बंद हो जाता है। यहां आने वाले शिवभक्तों को प्रतिदिन के दर्शन के समय ज्वार की जानकारी दी जाती है; जिससे ज्वार-भाटे के समय की जानकारी रहने पर उन्हें किसी परेशानी का सामना न करना पड़े। स्तंभेश्वर महादेव मंदिर में हर अमावस्या को मेला लगता है। प्रदोष, पूर्णिमा, एकादशी को यहां पूरी रात पूजा-अर्चना होती है। भगवान शिव के इस अद्भुत मंदिर में देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते रहते हैं।

- प्रभा पारीक

भारत में भी धूमधाम से मनाते हैं
तिब्बती नव वर्ष लोसर फेस्टिवल

पर्व-संस्कृति

अंजू जैन

हम सब पश्चिमी कैलेंडर के अनुसार 1 जनवरी को और हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र प्रतिपदा को नव वर्ष मनाते ही हैं। इनके अलावा कुछ प्रदेशों में तिब्बती नववर्ष लोसर भी मनाया जाता है। इसकी विशेषताओं पर एक नजर।

वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को साकार होते देखने जैसा है तिब्बती नव वर्ष का भारत में धूमधाम से मनाया जाना। आज पूरी दुनिया में लोग एक-दूसरे के खान-पान, पहनावे और त्योहारों को अपना रहे हैं। भारत में पाश्चात्य नव वर्ष मनाया जाना तो बहुत सामान्य बात है लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि हमारे देश में तिब्बती नव वर्ष लोसर को भी धूमधाम से मनाया जाता है।

क्या है लोसर उत्सव: 'लोसर' दो तिब्बती शब्दों से मिलकर बना है, जिसमें 'लो' का अर्थ 'नया' और 'सर' का अर्थ 'वर्ष' होता है, जिसका सामूहिक अर्थ 'नया साल' है। लोसर तिब्बत, नेपाल और भूटान का सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध त्योहार है। हमारे देश में यह मुख्य रूप से सिक्किम, लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में तिब्बती बौद्ध समुदाय एवं कुछ स्थानीय जनजातियों द्वारा मनाया जाता है। यह उत्सव जीवन के नवीनीकरण, समृद्धि और आध्यात्मिक शुद्धि का प्रतीक है।

सांस्कृतिक महत्व: लोसर उत्सव को हालांकि 'तिब्बती नव वर्ष' कहा जाता है, लेकिन इसकी जड़ें बौद्ध धर्म के आगमन से भी पुरानी हैं। यह मूलतः 'बोन' परंपरा का हिस्सा था, जहां लोग सर्दियों के अंत में प्रकृति को धन्यवाद देने के लिए धूप जलाते थे। बाद में, जब बौद्ध धर्म तिब्बत की मुख्य धारा बना, तो यह उत्सव आध्यात्मिक और धार्मिक रंगों में रंग गया। इस वर्ष लोसर 18 फरवरी, बुधवार को मनाया जाएगा। इसका मुख्य उत्सव आमतौर पर तीन दिनों तक चलता है, लेकिन यह त्योहार 15 दिनों तक मनाया जाता है।

साफ-सफाई का महत्व: लोसर में साफ-सफाई का खास महत्व है। सबसे पहले 'लाबा लोसर' मनाया जाता है, जिसमें घरों की पुताई और सफाई की जाती है। सभी पुरानी, अनुपयोगी वस्तुओं को हटा दिया जाता है। मान्यता है कि ऐसा करने से घर में अच्छा स्वास्थ्य, शांति और समृद्धि आती है। इस अवसर पर घरों को सजाया जाता है और नई प्रार्थना पताकाएं फहराई जाती हैं।

विशेष खान-पान: लोसर पर विशेष भोजन जैसे 'खप्से' (तले हुए बिस्कुट) और 'गुथुक' (एक प्रकार का नूडल सूप) तैयार किए जाते हैं। अमावस्या की पूर्व संध्या पर परिवार 'गुथुक' पीते हैं।

तीन दिनों तक विशेष कार्यक्रम: लोसर उत्सव के पहले दिन सूर्योदय से पहले ही मठों में शंखों की आवाज गूंजने लगती है। इस दिन लोग अपने धर्मगुरुओं का आशीर्वाद लेते हैं। देवताओं और आत्माओं के लिए धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, जिसमें घरों में घी के दीये जलाना और बौद्ध धर्मग्रंथों का पाठ करना शामिल है। दलाई लामा और अन्य उच्च लामाओं की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना की जाती है। घरों में 'चेमार' (सत्तू और मक्खन का मिश्रण) का भोग लगाया जाता है।

दूसरा दिन 'ग्यालपो लोसर' (राजाओं का दिन) होता है। यह दिन सामुदायिक मिलन का होता है। ऐतिहासिक रूप से यह दिन शासकों और उनके मंत्रियों के बीच संवाद का होता था। आज के संदर्भ में, यह सार्वजनिक समारोहों, नाच-गाने और मेलों का दिन है। लद्दाख और धर्मशाला की सड़कों पर पारंपरिक पोशाक 'चूबा' पहने लोग एक-दूसरे को 'लोसर ताशी देलेक' (नए साल की शुभ मंगलकामनाएं) कहते हैं।

तीसरा दिन 'चो-क्योंग लोसर' (धर्म रक्षकों का दिन) है। इस दिन लोग पहाड़ की चोटियों पर जाकर 'धूप' (सांग) जलाते हैं और प्रार्थना झंडे (लुंगता) फहराते हैं। ये झंडे शांति, करुणा और शक्ति के प्रतीक हैं।

मुखौटा नृत्य (छम): लोसर उत्सव का सबसे रोमांचक पहलू मठों में होने वाला 'छम' या मुखौटा नृत्य है। यह नृत्य बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। रंगीन रेशमी कपड़े और भयानक दिखने वाले मुखौटे पहनकर लामा नृत्य करते हैं। ड्रम और लंबी झांझों की थाप पर किया जाने वाला यह नृत्य दर्शकों को एक अलग ही आध्यात्मिक दुनिया में ले जाता है। *

फैशन जोन

प्रतिमा अरोड़ा

बदलते मौसम के अनुसार हमारे ड्रेसिंग सेंस में बदलाव होने लगता है। यही वजह है कि इन दिनों यंगस्टर्स शर्ट और जैकेट के कॉम्बो यानी शैकेट पहनना काफी पसंद कर रहे हैं। इसकी क्या है खासियतें और यंगस्टर्स इन्हें क्यों पसंद करते हैं, इस बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

बदलते मौसम में परफेक्ट शैकेट से मिले स्मार्ट लुक

सर्दी का मौसम जैसे-जैसे विदा ले रहा है, मौसम हल्का गर्म होने लगा है, तो फैशन की दुनिया भी करवट ले रही है। भारी कोट, मोटे स्वेटर, अब वार्डरोब या अलमारियों में जाने लगे हैं। इनके स्थान पर हल्के स्टाइलिश और बहुपयोगी शर्ट+जैकेट या शैकेट का क्रेज दिनोंदिन बढ़ने लगा है। शैकेट वास्तव में शर्ट की आरामदेह संरचना और जैकेट की मजबूती का मिश्रण होता है। यह न तो पूरी तरह से शर्ट और न ही पूरी तरह से जैकेट बल्कि दोनों का संतुलित रूप होता है। इसीलिए यंगस्टर्स के बीच यह तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

इसलिए युवाओं को है पसंद: फरवरी और मार्च का महीना वासंती मौसम के महीने होते हैं। इस दौरान न ज्यादा ठंड और न ही ज्यादा गर्मी होती है। ऐसे समय में शैकेट युवाओं के लिए परफेक्ट विकल्प बनकर आता है। लेयरिंग में आसानी भी एक बड़ा कारण है कि यह तेजी से ट्रेंडी हो रहा है। दरअसल टी-शर्ट, फुलस्लीव शर्ट या पतली हुडी के ऊपर शैकेट पहनकर स्टाइलिश लुक मिल जाता है। इसे पहनने का एक फायदा यह भी है कि यह शरीर पर टाइटनेस के साथ चिपकता नहीं है। शरीर लंबे समय तक इसके साथ कंफर्टेबल रहता है और सबसे बड़ी बात यह है कि यह यूनिसेक्स अपील रखता है। यह लड़कों और लड़कियों दोनों पर समान रूप से सूट करता है। इसीलिए खासतौर पर कॉलेज गोइंग यंगस्टर्स को शैकेट बहुत पसंद आ रहा है। इसका फैब्रिक पतला होता है। यह फिट होता है लेकिन बहुत टाइट नहीं होता है। यह ठंड से बचाता है लेकिन बहुत गर्म अहसास नहीं कराता है। इसके बटन और सिलाई काफी मजबूत होती है। इसका वजन हल्का होता है ताकि लेयरिंग को आसान बनाए। इन्हीं वजहों से यंगस्टर्स इन्हें पहनना पसंद करते हैं। शैकेट का ट्रेंड सिर्फ अपने देश में ही नहीं पूरी दुनिया के युवाओं को भा रहा है, क्योंकि अगर फैशन इतिहास को देखें तो शैकेट की जड़ें वर्किंग मैन वियर और मिलिट्री क्लोदिंग से जुड़ी हुई हैं।

बनता है इन फैब्रिक्स से: शैकेट आमतौर पर कॉटन ट्विल, डेनिम, कॉडरॉय और वूलेन मिश्रित फैब्रिक से बने होते हैं। हल्के वजन वाले कॉटन मिक्स शैकेट इस बदलते मौसम में ज्यादा पसंद किए जाते हैं। अगर थोड़ी ठंड महसूस हो तो वूलेन मिक्स्ड शैकेट आप वियर कर सकते हैं। वैसे तो आपको शैकेट्स में कलर्स की ढेरों वैरायटीज मिल जाएंगी। आप उनमें से अपनी पसंद का कोई कलर सेलेक्ट कर सकते हैं। लेकिन अगर शैकेट में कलर और पैटर्न ट्रेंड की बात करें तो ऑलिव ग्रीन, टैन ब्राउन, चारकोल ग्रे, डेनिम ब्लू कलर के शैकेट्स बहुत अट्रैक्टिव लगते हैं। अब यंगस्टर्स के बीच ब्राइट कलर वाले शैकेट्स के बजाय सॉफ्ट और अर्थी टोन वाले शैकेट्स की मांग ज्यादा बढ़ रही है, क्योंकि ये ज्यादा मैचिंग फ्रेंडली होते हैं। जहां तक शैकेट में ट्रेंडी पैटर्न और डिजाइन की बात है तो चेक्स प्रिंटेड और प्लेड पैटर्न यंगस्टर्स के बीच काफी पसंद किए जाते हैं।

लगातार बढ़ रही है डिमांड: हाल के सालों में बदलते मौसम में बाजार में शैकेट की लगातार मांग बढ़ रही है। क्योंकि कुछ वर्षों में ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और लोकल ब्रांड ने अपनी नियमित क्लेक्शन में भी शैकेट को शामिल किया है। फैशन रिटेल से जुड़े जानकारों के मुताबिक यह ट्रांजिशनल वियर यानी बदलते मौसम के समय का फैशन हर साल 15 से 20 फीसदी तक वृद्धि हासिल कर लेता है। इसकी बढ़ती मांग का एक कारण यह है कि यह मीडियम रेंज में उपलब्ध होता है। वियर करने पर बहुत सोबर और एलीगेंट लुक देता है। इसके अगर बजट रेंज की बात करें तो शैकेट 800 से 1500 रुपए में मिल जाता है। मिड रेंज की बात करें तो 1500 से 3000 रुपए के बीच इसका रेंज देखा जा सकता है। जबकि प्रीमियम रेंज की बात करें तो 3000 रुपए से ऊपर आपको फाइन क्वालिटी के शैकेट मिल जाते हैं। इसकी यह रेंज दर्शाती है कि हर वर्ग के यंगस्टर्स के लिए शैकेट्स उपलब्ध हैं। यही कारण है कि अपने देश में इसकी डिमांड बदलते मौसम में बढ़ जाती है। इसकी मांग के पीछे एक कारण सस्टेनेबिल्टी भी है। कई ब्रांड अब रि-साइकिल्ड फैब्रिक और आर्गेनिक कॉटन से शैकेट बना रहे हैं। उससे पर्यावरण पर कम असर पड़ता है और युवावर्ग को यह सोच पसंद आती है कि वे स्टाइल के साथ-साथ अपनी सामाजिक जिम्मेदारियां भी पूरी कर रहे हैं।

पर्सनालिटी को देता है नया लुक: शैकेट की एक खासियत यह है कि यह तमाम दूसरे फैशन के साथ मर्ज नहीं हो रहा बल्कि एक अलग से पहचान बनाने में कामयाब है। आज के दौर में यंगस्टर्स फैशन को केवल कोई भी ड्रेस पहनने तक सीमित नहीं मानते बल्कि उससे अपने आराम और प्रभाव की तुलना करते हैं। शैकेट इन दोनों कसौटियों में खरा उतरता है। यही कारण है कि यह युवाओं को पसंद आता है। इनसे उन्हें स्मार्ट लुक मिलता है। *

फिल्म 'विधाता' में दिलीप कुमार-शम्मी कपूर

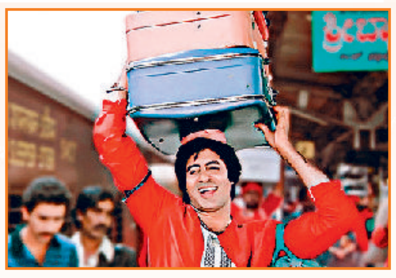
फिल्म 'कुली' के सीन में अमिताभ बच्चन

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का क्लाइमेक्स सीन

सिने ट्रेंड

अशोक वाधवाणी

रेल में सफर का अलग ही मजा होता है। देश के करोड़ों लोगों की लाइफलाइन से जुड़ी रेलगाड़ी को बॉलीवुड फिल्मों में भी खूब दिखाया जाता रहा है। खास बात यह है कि फिल्मों में ट्रेन वाले सीन और सॉन्ग्स खूब पॉपुलर भी हुए हैं। यहां बात कुछ ऐसी ही फिल्मों की, जिनके टाइटल, सीन या सॉन्ग में ट्रेन मौजूद रही है।

फिल्मों में खूब हुए पॉपुलर ट्रेन बेस्ड सींस-सॉन्ग्स

अपने देश में आज भी अधिकांश लोगों के लिए रेल यात्रा सबसे सुविधाजनक और सस्ती मानी जाती है। यही वजह है कि हिंदी फिल्मों में भी मालगाड़ी से लेकर, यात्री गाड़ी और अत्याधुनिक ट्रेनें भी दिखाई जाती रही हैं। ट्रेन यात्रा से जुड़े दृश्य और गीत मन में अमिट छाप छोड़ते हैं। एंटरटेनमेंट के लिए रेल में रोमांस, रोमांच, रहस्य के अलावा रेलवे स्टेशन, प्लेटफॉर्म, रेल की पटरियां, कुली आदि बहुत कुछ हिंदी फिल्मों में दिखाए जाते रहे हैं।

ट्रेन से जुड़े फिल्मों के नाम: बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनी हैं, जिनके टाइटल ट्रेन या रेलवे के इर्द-गिर्द रखे गए हैं। पुराने जमाने की नायिका नादिया की कई चर्चित फिल्मों के नाम ट्रेन के नाम पर ही रखे गए। उनमें से प्रमुख हैं 'मिस फ्रंटियर मेल'(1936), 'पंजाब मेल'(1939), 'दिल्ली एक्सप्रेस' (1949)। इसी क्रम में 'प्लेटफॉर्म' (1955), '27 डाउन' (1974), 'द ट्रेन' (1971), 'कुली' (1984), 'द बर्निंग ट्रेन' (1980), 'चेन्नई एक्सप्रेस' (2000) जैसी फिल्मों के टाइटल्स से ही पता चलता है कि फिल्म की कहानी रेल के इर्द-गिर्द घूमने वाली होगी।

फिल्मी दृश्यों में ट्रेन: बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनीं, जिनकी शुरुआत में ही रेल दिखाई गई, जैसे- दोस्त (1974)। कुछ फिल्मों का क्लाइमैक्स रेलवे स्टेशन पर फिल्माया गया है, जैसे- 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे'(1995)। इसके अलावा शाहरुख खान की कुछ और फिल्मों में भी ट्रेन की अपनी विशेष भूमिका रही है। 'दिल से', 'स्वदेश', 'वीर-जारा', 'रईस', 'पठान', 'जवान' आदि कई फिल्मों में लाजवाब रेल सीन फिल्माए गए हैं।

धर्मेंद्र का रेल कनेक्शन: पिछले वर्ष दिवंगत हुए सदाबहार अभिनेता धर्मेंद्र की शुरुआती फिल्में जैसे-'शोला और शबनम', 'आपकी परछाइयां', 'फूल और पत्थर' से लेकर 'दोस्त' आदि में रेल का रोल इंपॉर्टेंट रहा। दिलचस्प बात यह है कि धर्मेंद्र ने फिल्मों में आने से पहले कुछ समय तक रेलवे में क्लर्क की नौकरी भी की थी।

ट्रेन में फिल्माए गए कुछ यादगार दृश्य: फिल्मों में ट्रेन के कई ऐसे दृश्य फिल्माए गए हैं, जो यादगार बन गए। 'गांधी' (1982) में एक छोटा सा सीन है, जोकि गांधी जी के जीवन का टर्निंग पॉइंट बना। दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन के फर्स्ट क्लास में यात्रा करने के कारण एक अंग्रेज, नाराज होकर, गांधीजी को एक स्टेशन पर सामान समेत डिब्बे के बाहर फेंक देता है। इसके अलावा इसी फिल्म में गांधीजी की ट्रेन से यात्रा के कुछ और सीन भी हैं। 'जब वी मेट' (2007) में फिल्म का नायक मुंबई से ट्रेन में चढ़ता है। रतलाम स्टेशन पर नायिका की ट्रेन छूटती है। आगे दोनों की ट्रेन जर्नी, रेल कर्मियों के साथ उनका वार्तालाप आदि कई रोचक, मनोरंजक दृश्य हैं। 'बड़े मियां, छोटे मियां' (1998) में अमिताभ बच्चन और गोविंदा ट्रेन की बोगी के सभी यात्रियों का सामान, चालाकी से लूट लेते हैं। कई कलाकारों ने फिल्म में रेल कर्मियों के रोल निभाए हैं। 'अजनबी' (1974) में राजेश खन्ना स्टेशन मास्टर बने हैं। 'विधाता' (1982) में दिलीप कुमार और शम्मी कपूर ट्रेन ड्राइवर बने हैं। ओम प्रकाश ने 'जूली' (1975) में ट्रेन ड्राइवर का रोल निभाया है।

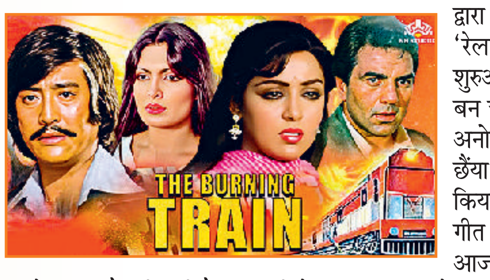

ट्रेन पर आधारित गीत: ट्रेन के भीतर, ट्रेन की छत पर या ट्रेन के इर्द-गिर्द कई फिल्मों के गीत भी फिल्माए गए हैं, जो काफी लोकप्रिय हुए। 'आओ बच्चो तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की' ट्रेन में फिल्माए गए फिल्म 'जागृति' (1954) के इस गाने में अध्यापक की भूमिका में अभि भट्टाचार्य, छात्रों को भारत देश के इतिहास से अवगत करवाते हैं। 'आशीर्वाद' (1968) में अशोक कुमार द्वारा गाया और उन्हीं पर फिल्माया रैप सांग 'रेलगाड़ी छुक-छुक-छुक' बॉलीवुड का शुरुआती रैप सॉन्ग है। इसके कई रिमिक्स भी बन चुके हैं। 'दिल से' (1998) में एक नया, अनोखा प्रयोग किया गया था। फिल्म मे 'चल छैंया छैंया' गीत रेल के डिब्बों पर पिक्चराइज किया गया डांस सॉन्ग है। 'दोस्त' (1974) का गीत 'गाड़ी बुला रही है, सीटी बजा रही है...' आज भी लोकप्रिय है। फिल्म 'कुली' (1983) में अमिताभ बच्चन पर फिल्माए गए गीत 'सारी दुनिया का बोझ हम उठाते हैं' में भी ट्रेन और रेलवे प्लेटफॉर्म के दृश्य नजर आते हैं। इन लोकप्रिय गीतों के अलावा भी रेल में हर मूड, सिचुएशन के गानों, दृश्यों की लंबी लिस्ट है। *